रसराज

कबिमतिरामकृत

[illegible] शंकर सुक्ल की
आज्ञानुसार

आगरा

बेलन गंज में पण्डित केशव प्र
साद द्विवेदी के प्रबंध से विद्या
रत्नाकर यंत्र में छापा गया॥

सन् १८८६ ई०
भाद्र शुक्ला ६ संवत् १९४३

श्रीगणेशायनमः

अथ रसराज मतिरामकृत

दोहा

होतु नायका नायकहि आलंबित सिंगार ॥ तातें
बरनत नाइका नायक मति अनुसार ॥ १ ॥ अथ
नाइका लक्षण ॥ उपजत जाहि बिलोकि कें चित्त
बीच रसभाव ॥ ताहि बखानत नाइका जे प्रवीन कवि
राव ॥ २ ॥ यथा कवित्त ॥ कुंदन को रंग फीको
लगै झलकै ऐसी अंगनि चारु गुराई ॥ आंखिन में अ
लसानि चितौनि में मंजु विलासनि की सरसाई ॥ को वि
नु मोल बिकाइ नहीं मतिराम लहैं मुसिक्यानि मिठाई
ज्यों ज्यों निहारिये नेरे ह्वै नैननि त्यों त्यों खरी निखरै
सी निकाई ॥ ३ ॥ दोहा ॥ छिद्र जाल मग ह्वै कढै
निकसन दीपत पुञ्ज ॥ झिंझिया को सो घट भयो दि
ही में बन कुञ्ज ॥ ४ ॥ तरनि अरुण एडीनि के किरनि
समूह उदोत ॥ बेनी मंडन मुकत के पुंज गुंज रुचि होत ५
कही नाइका तीन विधि प्रथम स्वकीया जान ॥ पर
कीया पुनि दूसरी गनिका तीजी मान ॥ ६ ॥ अथ स
कीया लक्षण ॥ लाजवंति निशिदिन पगी निज
अनुराग ॥ कहत स्वकीया शील मय ताको पति

यथा ॥ संचि बिरंचि निकाई मनोहर लाजतु मूरति वंत बनाई ॥ तापर तोपर भाग बड़े मतिराम लसै पति प्रीति सुहाई ॥ तेरे सुशील सुभाय भट्ट कुलनारिन को कुल कानि सिखाई ॥ तेही मनों पति देवता के गुन गौरि सबै गुन गौरि पढ़ाई ॥ ८ ॥ **दोहा** ॥ जानति सौति अनीति है जानैति सखी सुनीति ॥ गुरुजन जानत लाज है प्रीतम जानत प्रीति ॥ ९ ॥ **अथ स्वकीया भेद** - त्रिविध स्वकीया जानिये प्रथमहिं मुग्धा नाम ॥ मध्या पुनि प्रौढ़ा गनों बरणत कवि मतिराम ॥ १० ॥ **मुग्धा लक्षण** अभिनव जोबन आगमन जाके तन में होय ॥ ताको मुग्धा कहत हैं कवि कोविद सब कोय ॥ ११ ॥ **यथा** । नेक मंद मधुर कपोल मुसक्यानि लागे नेक मंद गमन गयंदनि की चाल भौ ॥ रंच उच्चौ अंचल उरोजनि के अंकुरनि बंक डीठि नेक जुग नैननि विशाल भौ ॥ मतिराम सुकवि रसीले कछू वै न भए वदन सिंगार रसबेलि आल वाल भौ ॥ बाल तन जोबन रसाल उलहत लखि सौतिन कौं साल भौ निहाल नंदलाल भौ ॥ १२ ॥ **यथा दोहा** । अभिनव जोबन ज्योति सों जगमग होत विलास ॥ तिय के तन पानिप बढ़ै पिय के नैननि प्यास ॥ १३ ॥ **मुग्धा भेद** ॥ मुग्धा के द्वै भेद वर भाषत सुकबि

सुजान॥ एक अज्ञातक जोबना ज्ञात जोबना आ
न॥ १४॥ **अथ अज्ञात जोबना**॥ निजतनजो
बन आगमन जो नहिं जानति नारि॥ सो अज्ञातक जो
बना बरनत कवि निरधारि॥ १५॥ **यथा**॥ खेल
नि चोरमिहींचनी आजु गई हुती पाछिले द्यौस की नाईं
आली कहा कहौं एक भई मतिराम नई यह बात त
हांई॥ एकहि भौन दुरे इक संग हि अंग सों अंग छुवा
यो कन्हाई॥ कंप उठ्यौ घन स्वेद बढ्यौ तन रोम
उठे अंखियां भरि आई॥ १६॥ **दोहा**। लाल तिहा
रि संग में खेलै खेल बलाय॥ मूंदत मेरे दृगनि हौ
करनि कपूर लगाय॥ १७॥ **ज्ञात जोबना लक्ष॰**
निज तन जोबन आगमन जानि परतु है जाहि॥ क
वि कोविद सब कहत हैं ज्ञात जोबना ताहि॥ १८॥
यथा। कानन लौ लागे मुसक्यान प्रेम पागे चाय
लोने लाज भरे बिलसत है अनंग ते॥ भार भुज धरि
कें डुलावति चलति मंद औरै छबि उलहति उरज उ
तंग ते॥ मतिराम जोबन पवन की झकोर आयें बाढ़
तु सरस सरस तरल तरंग ते॥ पानिप अमल की झल
क झलकनि लागी काई सी गई है लरिकाई छुटि
अंग ते॥ १९॥ **दोहा**। इतै उतै सचकित चितै चलति

डुलावति दांह ॥ डीठिबचाई सखिन की छिनकु निहा
रति छांह ॥ २० ॥ अथ नवोढा ॥ मुग्धा जहं भय लाज
तें रति न चहै पति संग ॥ ताहि नवोढा कहत हैं जे प्रवीन
रस रंग ॥ २१ ॥ यथा ॥ साथ सखी के नई दुलही कों
भयो हरि को हियो हेरि हिमंचल ॥ आइ गए मतिरा
म तहां घर जानि इकंत अनंग सों चंचल ॥ देखत हीं
नंदलाल के वाल के पूरि रहे अंसुवानि दृगंचल ॥
बात कही न गई सु रही गहि हाथ दुहूं सों सहेली को
अंचल ॥ २२ ॥ दोहा । ज्यों ज्यों परसैं लाल अंग त्यों
त्यों राखे गोय ॥ नवल वधू डर लाज तें इन्द्र वधू सी
होय ॥ २३ ॥ अथ विश्रब्ध नवोढा ॥ दो० ॥ होय
नवोढा की कछू प्रीतम सों परतीति ॥ सो विश्रब्ध
नवोढा यों बरणत कवि रस रीति ॥ २४ ॥ यथा ॥
केलि के राति अघाने नहीं दिन हीमें लला फिर घा
त लगाई ॥ प्यास लगी कोउ पानी दे जाइ यों भी
तर बैठि के बात सुनाई ॥ जिठानी एठाइ गई दुल
ही हंसि हेरि हरे मतिराम बुलाई ॥ कान्ह के बोल
में कान न दीन्हो सु गेह की देहरी पै धरि आई ॥
२५ ॥ दोहा । प्रीतम तुम्हरी सेज पै हौं आवति नो
पाल ॥ दया गहै बात न कहो दुख न दीजिये लाल २६

अथ मध्या लक्षण ॥ जाके मन में होतु है लाज मनोज समान ॥ मध्या तासों कहत हैं कवि मतिराम सुजान ॥ २७ ॥ यथा ॥ चित्र में विलोकत ही लाल को बदन बाल जीते जिन कोटि चंद सरद पुनीनि के ॥ मुसक्यात अमल कपोलनि में रुचि इंद चमकत खौं ननि की रुचिर चुनीनि के ॥ प्रीतम निहार्‌यौ चांह गहत अचानक ही जामें मतिराम मन सकल मुनीनि के ॥ गाढें गही लाज में न कंठ कै फिरत बैन मूल ह्वै फिरत नैन वारि बरुनीनि के ॥ २८ ॥ दो० केलि भौन की देहरी खरी बाल छवि नौल ॥ काम कलित हिय को लहै लाज कलित दृग कौल ॥ २९

अथ प्रौढा लक्षण ॥ निज पति सों रति केलि में सकल कलानि प्रवीन ॥ प्रौढा तासों कहत हैं जे कवित रसलीन ॥ ३० ॥ यथा ॥ प्रान प्रिया मन भावन संग अनंग तरंग निरंग पसारे ॥ सारी निशा मतिराम मनोहर केलि के पुंज हजार उघारे ॥ होत प्रभात चल्यै चहै प्रीतम सुंदरि के हिय में दुख भारे ॥ इन्दु सो आनन दीप सी दीपति श्याम सरोज से नैन निहारे ॥ ३१ दो० ॥ लपिटानी तिय प्रेम सों दै उर उरज उतंग ॥ घरी एकलौं छुटे पर रही लगी सी अंग ॥ ३२ ॥ अथ म

ध्या प्रौढा भेद ॥ मध्या प्रौढा मान में तीनि तीनि विधि जानि ॥ धीरा और अधीर तिय धीरा धीरा मांनि ३३ ॥ अथ धीरा ॥ वचननि की रचनानि सों पियहि जनावै कोपु ॥ मध्या धीरा कहत हैं नाहि सुमति रस चोपु ३४ यथा ॥ तुम कहा करो काहू कामते अटकि रहे तुम्हैं कहा दोष दोष आपने ही भाग है ॥ आये मेरे भौन वडे भोर अति प्यार ह्वां ते अति हरवरे न वनाइ वांधी पाग है ॥ मेरे ही वियोग रहे जागत सकल राति अंग अलसान मेरो परम सुहाग है ॥ मनहूं की जानी प्रान प्यारे मतिराम यह नैननि ही माहिं पाइयतु अनुराग है ॥ ३५ ॥ दोहा ॥ अज्यौं उहावत हो नहीं पीर न होति सयाग ॥ ठौर ठौर या भोर के दसे अधर दल दाग ॥ ३६ ॥

अथ मध्या अधीरा ॥ दोहा ॥ मध्या कहिय अधीर तिय बोले वचन कठोर ॥ पियहि जनावे कोप को वरणत कवि सिर मोर ॥ ३७ ॥ यथा

कोऊ नहीं वरजै मतिराम रहौ तित ही जित ही मन भायो ॥ काहे को सौंहें हजार करो तुम तो कवहूं अपराध न आयो ॥ सोवन दीजै न दीजै हमें दुख यों ही कहा रस वाद वढायो ॥ मानु रह्योई नहीं मन मोहन

मानिनी होय सु माने मनायो ॥ ३९॥ दोहा ॥
वलय पीठ तरिवन भुजनि सकुच कुंकुमा छाप ॥
तितै जाहु मन भावते जितै विकाने आप ॥ ३९ ॥
अथ मध्याधीराधीरा ॥ मध्या धीराधीर तिय
ताहि कहत सव कोय ॥ पिय सों कहि के वचन कछु
रोष जनावै रोय ॥ ४० ॥ यथा ॥ आजु कहा तजि
वैठी हौ भूषन ऐसे ही अंग कछू अरसीले ॥ वोलति
वोल रुखाई लिये मतिराम सनेह सुने ते सुशीले ॥
क्यों न कहै दुख प्रान पिया अंसुवानि रहे भरि नैन
रसीले ॥ क्यौंन तिन्हैं दुख है जिनके तुम से मनभा
वन छैल छवीले ॥ ४१ ॥ दो० ॥ तुम सों कीजै मान
क्यौं वहु नायक मन रंज ॥ वात कहत यों वाल के
भरि आये दृग कंज ॥ ४२ ॥ अथ प्रौढा धीरा ॥
पिय सों प्रगट न रिस करै रति ते रहै उदास ॥ प्रौढाधी
रा जानियो सो निज सुमति विलास ॥ ४३ ॥ यथा ॥
वैसेही चितै के मेरे चित को चुरावति हौ वोलति हौ
वैसेही मधुर मृदु वानि सों ॥ कवि मतिराम अंक भ
रत मयंक मुखी वैसेही रहति गहि भुजलतिकानि सों
चूमत कपोल पान करत अधर रस वैसीयै निहारी रीति
सकल कलानि सों ॥ कहा चतुराई ठानियत प्रान

प्यारी तेरो मानु जानियतु लखी मृदु मुसिक्यानि सों। ४४॥ दोहा॥ ढीली बांहनि सों मिली बोली कहू न बोल॥ सुन्दरि मानु जनाइयो लियो प्राणपति मोल॥४५॥ अथ प्रौढा अधीरा॥ रूठ देके पिय को प्रिया देइ सुमन की मार॥ प्रौढ अधीरा कहत हैं ताहि सुकबि मतिराम॥४६॥ यथा जाके अंग अंग की निकाई निरखत आली वारने अनंग की निकाई कीजियति है॥ कबि मतिराम जाकी चाह ब्रजनारिन की देह अंसुवानि के प्रवाह भीजियति है॥ जाके बिनु देखे न परति कल तुमहू को जाके बैन सुनत सुधा सी पीजियति है॥ ऐसे सुकुमार पिय नन्द के कुमार ताहि फूलनि की माल की यों मार दीजियति है॥४७ दोहा॥ जहां जहां सखि देति तू फूल माल की मारु॥ तहां तहां नंद लाल के लखे रोम तन चारु। ४८॥ अथ प्रौढाधीराधीरा॥ रतिउदास ह्वै नाह को डर दिखरावे बाम॥ प्रौढाधीर अधीरा तिय बरणत कबि मतिराम॥ ४९॥ यथा प्रीतम आये प्रभात पिया घर राति रमे रति चिन्ह लिये ही॥ सोचि रही पलिका पर सुंदरि

नैन नचाइ के धीर धरे ही ॥ बांह गहे मतिराम क
हैं न रही सिस मानिनि के हठ के ही ॥ बोली न बो
ल कछू सतराइ यो न भौंह चढाइ रही तिरछें ही
५०॥ दोहा ॥ आवत उठि आदर कखौ बोली
बोल रसाल ॥ बांह गहत नंद लाल के भये बाल
दृग लाल ॥ ५१ ॥ अथ ज्येष्ठा कनिष्ठा लक्षण
वरणन ज्येष्ठ कनिष्ठिका जे ब्याही द्वै नारि ॥
प्रथम पियारी दूसरी घाटि प्यारी उर धारि ॥ ५२
यथा ॥ बैठीं एक सेज पै सलोनी मृग नैनीं दो
ऊ आये तहां प्रीतम सुधा समूह बरसै ॥ कवि
मतिराम ढिंग बैठे मन भावन दुहूं के हिय अर
बिन्द मोद वृंद सरसै ॥ आरसी दै एक सौं कह्यौ
कि निज मुख लखौ जामें बिधु बारिज बिलास
बर दरसै ॥ दरप सों भरी वह दरपन देखै तौलों
प्यारो प्रान प्यारी के उरोज हारि परसै ॥ ५३ ॥
दोहा ॥ बेनी गूंदत एक की नंद लाल चित लोल।
चूमत प्यारी के मधुर बिहसत गोल कपोल ॥ ५४
अथ परकीया लक्षण ॥ प्रेम करै पर पुरुष सों
परकीया सो जान ॥ दोइ भेद ऊढा प्रथम और
अनूढा मान ॥ ५५ ॥ अथ ऊढा लक्षण ॥

व्याही औरै पुरुष सों औरै सों रस लीन ॥ ऊढ़ा
तासों कहत हैं कवि पण्डित परबीन ॥ ५६ ॥ य
था ॥ क्यों इनि आंखिन सों निरसंक ह्वै मोहन
को तन पानिप पीजे ॥ नेक निहार कलंक लगै
इहि गांउ बसे कहो कैसे के जीजे ॥ होत रहे म
न यों अतिराम कहूं बन जाइ बड़ो तप कीजे ॥
ह्वै बनमाल हिये लगिये अरु ह्वै मुरली अधरारस
लीजे ॥ ५७ ॥ दोहा ॥ कंत चौक सीमंत के
बैठे गांठि जुराइ ॥ पेषि परोसी कों पिया घूंघट
में मुसिक्याइ ॥ ५८ ॥ अथ अनूढ़ा लक्षण ॥ अन
व्याही केहि पुरुष सों अनुरागिनि जो होइ ॥ ताहि
अनूढ़ा कहत हैं कवि कोबिद सब कोइ ॥ ५९ ॥
यथा ॥ गोपसुता कहै गौरि गुसाइनि पायं परौं मो
बिनती सुन लीजे ॥ दीन दयानिधि दासी के ऊपर
नेसिक चित्त दयारस भीजे ॥ देहिं जो ब्याहि उ
छाहि के मोहनै माता पिताहू के मे मन कीजे ॥
सुन्दर सांवरो नन्दकुमार वसै उर जो वर सो वर
दीजे ॥ ६० ॥ दोहा ॥ हौं सुनि आई नन्द घर
अब तू होहु निसंक ॥ राधे मोहन व्याहते जैहै
धोइ कलंक ॥ ६१ ॥ अथ परकीया भेद ॥

परकीया के भेद ये गुप्ता प्रथम बखानि ॥ ६ दु
रि विदग्धा लक्षिता कुलटा मुदिता मानि ॥ ६१
औरो अनुसय ना कही तिनिकै बिबिध बिबेक
वरणत कबि मतिराम हैं रस सिंगार की सेक ॥
६२॥ अथ गुप्ता लक्षण ॥ सुरति छिपावै जो
तिया सो गुप्ता उर आनि ॥ बरणत कबि मतिरा
म हैं चतुराई की खानि ॥ ६४ ॥ यथा ॥ लेन गई
ऊती बागनि फूल अंधियारी लखें डरु बाढ्यौ म
हाई ॥ रोम उठ्यौ तन कंप छुट्यौ मतिराम भई
श्रम की सरसाई ॥ बेलिनु में उरभी अंगिया
छतियां अति कंटक के छत छाई ॥ देह में नेक
संभार रही नहिं ह्यां लगि भाजि भरू करि आई ॥
६५॥ दोहा ॥ भलो नही यह केवरो सजनी गेह
अराम ॥ बसन फटैं कंटक लगैं निशि दिन आठौं
जाम ॥ ६६॥ अथ विदग्धा ॥ द्विविध विदग्धा
कहत हैं कवि करि विमल विवेक ॥ वचन विदग्धा
एक अरु क्रिया विदग्धा एक ॥ ६७ ॥ अथ वच
न विदग्धा लक्षण ॥ करै बचन सों चातुरी ब
चन विदग्धा जानि ॥ करै क्रिया सों चतुरई क्रि
या विदग्धा मानि ॥ ६८ ॥ यथा ॥ आई है नि

पट सांझ गैया गई घर मांझ ह्यां तौ दौरि आउ मे
रे कहौ काजु कीजिये ॥ हौं तो हौं अकेली को
ऊ दूसरो न देखियतु वन की अंधेरी सो अधिक
भय भीजिये ॥ कवि मति राम मन मोहन सों
पुनि पुनि राधिका कहत बात सांचु कै पतीजि
ये ॥ कब की हौं हेरनि न हेरें हरि पावति हौं व छ
रा हिरानो सो हिराय नेकु दीजिये ॥ ६९ ॥ दो०
खेतु तिहारो धान को यों बूझति मुसक्याइ ॥ य
है हमारो यों कह्यौ सघनज्वार दरसाइ ॥ ७० ॥
अथ क्रिया विदग्धा ॥ यथा ॥ बैठी तिया गु
रु लोगनि में रति तें अति सुन्दर रूप विशेषी
आइ गयो मतिराम सुजान मनों भवतें वढ़ि कौ
ति उरेषी ॥ लोचन रूप पियोई चहै अरु लाज
नि जानि नहीं छबि पेषी ॥ नैन नवाइ रही हि
य माल में लाल की मूरति लाल में देखी ॥ ७१
दोहा ॥ चढी अटारी वाम वह कियो प्रणाम अ
षोट ॥ तरनि किरनि तें हगनि को कर सरोज क
रि ओट ॥ ७२ ॥ अथ लक्षिता लक्षण । दो०
होत लखाइ जो सखिन कौं जासों पिय को प्रेम
ताहि लक्षिता कहत हैं कवि कोविद करि नेम ७३

यथा ॥ आई ही पाइ दिवाइ महावर कुंजनि तें करिके सुख सैनी ॥ सांवरे आजु संवारयौ है अंजन नैननि को लखि लाजति ऐनी ॥ बात के बूझत ही मतिराम कहा करिये अति भौंह तनेनी ॥ मूंदी न राखति प्रीति सखी यह गूंदी गुपाल के हाथ की बेनी ॥ ७४ ॥ दोहा ॥ सतरोंहीं मोहनि नहीं दुरै दुरायो नेह ॥ होति नांउ नंदलाल के कदम माल सी देह ॥ ७५ ॥ अथ कुलटा लक्षण जो चाहै बहु नाइकनि सरस सुरति पर प्रीति तासों कुलटा कहत हैं लखि ग्रंथनि की रीति ७६ यथा ॥ अंजन दै निकसी नित नैननि मंजन कै नित अंग सुधारै ॥ रूपगुमान भरी मग में पग ही के अंगूठा अनोट सुधारै ॥ जोवन के मद सों मतिराम भई मतवारी न लोग निहारै ॥ जाति चली इहि भांति गली छुटकी अलकैं अंचरा तौ सुधारै ॥ ७७ ॥ दोहा ॥ मोहि मधुर मुसक्यानि सों सबै गांउ के छैल ॥ सकल सैल वन कुंज में तरुनि सुरति की सैल ॥ ७८ ॥ अथ मुदिता लक्षण ॥ चित चाही बातें सुनत मुदित होइ जो बाल ॥ मुदिता तासों कहत हैं कवि मति

राम रसाल ॥ ७९ ॥ यथा ॥ मोहन सौं कछु
हौंसनि तें मति राम बढ़्यौ अनुराग सुहायो
वैठी हुती तिय मायके में ससुरारि को काहू
संदेसो सुनायो ॥ नाह के व्याह की चाह
सुने हिय मांह उमाह छवीली के छायो ॥ पौ
ढि रही पट ओढ़ि अटा दुखको मिसु कै सुख
बाल छिपायो ॥ ८० ॥ दोहा ॥ बिछुरत रो
वत दुहुन को यह सखि रूप लखैन ॥ दुख अं
सुवा पिय नैन हैं सुख अंसुवा तिय नैन ॥ ८१ ॥
अथ अनुसयना लक्षण ॥ केलि करै जह
कंन सों सो थल मिट्यो निहारि ॥ कही अनु
सयना सु यों सोच करै बर नारि ॥ ८२ ॥
यथा ॥ आई ऋतु पावस अकाश आठों दि
शानि में सोहन सरूप जलधरनि की भीरको
कबि मति राम सु कदंबनि की बासु युत स
रस बढ़ावै रस परस समीर को ॥ भौन तें नि
कसि वृषभान की किशोरी देख्यौ ता समय
सहेट कौ निकुंज गिर्‌यौ तीर को ॥ नागरि के
नैननि तें नीर को प्रवाह बढ़्यो निरखि प्रवाह
बढ़्यौ जमुना के नीर को ॥ ८३ ॥ दोहा ॥

ग्रीषम ऋतु की दुपहरी बन में लगी दवारि
एक अपूरब बात है जरति हिये बर नारि ॥ ८४
अथ दूजी अनुसयना ॥ होनहार संकेत
को ही अभाव उर आनि ॥ यहो अनुसयना
कही होय हिये दुखखानि ॥ ८५ ॥ यथा ।
बेलिन सों लपिटाइ रही है तमालनि की अ
वली अति कारी ॥ कोकिल केकी कपोतन के
कुल केलि करैं जहं आनंद चारी ॥ सोचु करै
जिनि होउ सुखी मतिराम प्रवीन सबै नर नारी
मंजुल वंजुल कुंजनि के घन पुंज सखी ससुरारि
निहारी ॥ ८६ ॥ दोहा ॥ केलि करै मधुमत्त
जहं घन मधुपनि के पुंज ॥ सोच न करु तो सासुरे
सखी सघन बन कुंज ॥ ८७ ॥ अथ तीजी अनु
सयाना ॥ प्रीतम गयो सहेट में जाने हेतु हि
पाइ ॥ यहो अनुसयना कही हौं न गई पछि
ताइ ॥ ८८ ॥ यथा ॥ सांझ समय मतिराम को
भवस वंशीधर वंशीबट तट में बजाई जाइ बां
सुरी ॥ सुमिर सहेट वृषभान की कुंवरि उर
दुख अधिकानो भयो सुख को बिनासु री ॥
हस सों समीर लाग्यो सूल सी सहेली सब

बिष सो बिनोद लाग्यौ वन सो निवासुरी ॥ ता
प चढ़ि आई तन पीरी परि आई मुख आंखिन
के ऊपर उमगि आये आंसुरी ॥ ८९ ॥ दोहा
हरी सपल्लव लाल कर लखि तमाल की डाल
कुम्हिलानी उर साल धरि फूल माल ज्यों बाल
९० ॥ अथ सामान्या लक्षण ॥ धन है जा
के संग में रमै पुरुष सब कोइ ॥ अंधन को मत
पाइ के गनिका जानो सोइ ॥ ९१ ॥ यथा ॥
लाल कर चरण रदन छद नख लाल मोति
न की रदन रही है छबि छाइ के ॥ कबि मति
राम सुबर्ण बरन खानि रही रूप खानि मुस क्यानि
सोभा सरसाइ के ॥ आनन को इन्दु जानि आंखें
अरविंद आनि इंदिरा रजनि दिन रहति सुहाइ
के ॥ नायक नवल कोंन देंइ मन धन ऐसी सु
तनि कौ सुतनु अतनु धन पाइ के ॥ ९२
दोहा ॥ लसति गूजरी ऊजरी बिलसति लाल
हजार ॥ हिये हजारनि के हरै बैठी बाल बजार
९३ ॥ अथ अन्य नायिका भेद ॥ अन्य संभोग दुः
खिता प्रेम गर्बिता जानि ॥ रूप गर्बिता और
पुनि मानवती उर आनि ॥ ९४ ॥ अथ अन्य

संभोग दुःखिता ॥ निज पति रति के चिन्ह जो लखै और तिय देह ॥ अन्य संभोग दुःखिता करै पेच सिर तेह ॥ ९५ ॥ यथा ॥ याही कों पठाई बड़ो काम करि आई बड़ी तेरी यै वड़ाई लखो लोचन सरसीले सों ॥ सांची क्यों न कहै काहू मोकों किधों आपुही कों पाई बकसीस लाई बसन छबीले सों ॥ कवि मतिराम सु संदेसो अनुमानियतु तेरे नख सिख अंग रोमांच सो हरख कटीले सों ॥ तू तो है रसीली रसदातनि बनाइ जाने मेरे जान आई रसु रखि कै रसीले सों ॥ दोहा ॥ कहत तिहारो रूप सखि यह पैंडे को खेद ॥ ऊँची लेति उसास पुनि कलित सकल तन स्वेद ॥ ९७ ॥ अथ प्रेम गर्विता ॥ निज नायक के प्रेम को गर्व जनावै बाल ॥ प्रेम गर्विता कहत है तासों सुमति रसाल ॥ ९८ ॥ यथा ॥ मेरे हंसे हंसत हैं मेरे बोले बोलत हैं मोही को जानत तन मन धन ध्यानरी ॥ कवि मतिराम भौंहें टेढी किये हांसी हू मैं छांडि देत भूख न रुचिर पानी पानरी ॥ मोते प्राणप्यारी प्राणप्यारे के न और कोऊ तासों रिस कीजै कहौ कहा को सयानरी ॥ मैन

ने काहू के रूप रीझे मैं न काहू के सिखाये आनों
मन मानरी ॥ ९९ ॥ दोहा ॥ औरनि के पाइनि
दियो नाइन जावक लाल ॥ प्राणपियारी रावरी
परषत तुम्हें रसाल ॥ १०० ॥ अथ रूपगर्विता
जाके अपने रूप को जिय में होइ गुमान ॥ रूप
गर्विता कहत हैं तासों परम सुजान ॥ १०१ ॥ य
था ॥ सोइ रही रति अंत रसीली अनंद बढ़ाइ अ
नंग तरंगिनि ॥ केसरि खौरि करी तिय के हिय
प्रीतम औरो सुवासु के संगनि ॥ जागि परी मति
राम सरूप गुमान जनावति भौंह के भंगनि ॥ ला
ल सों बोलति नाहिन बाल सु पोंछति आंखि अं
गौछति अंगनि ॥ १०२ ॥ दोहा ॥ कैसे आऊं
हौं उतै हैं जित नंद किशोर ॥ दिनहूं में मुखचं
द को लखि ललचात चकोर ॥ १०३ ॥ मान
वती ॥ करै ईरषा तें जु तिय मनभावन सों मा
न ॥ मानवती तासों कहत कवि जन परम सुजान
१०४ ॥ यथा ॥ सो मनमोहन होत लटू मुखजा
के मटू विधु की छवि छाजै ॥ खोलि के नैननि दे
खो जो नेकु तो श्याम सरोज पराजय साजै ॥ जौ
विहंसै तुव आनन तौ मतिराम विहान को वारि

न लाजै ॥ बोलै भली मृदु मंजुल बोल तो कोकि
ल बोलनि को मद भाजै ॥ १०५ ॥ दोहा ॥ सुन
दूत चित दै मानिनी बिनु अपराध रिसानि ॥
नेह जरावन को महा दीपजोति तिय जानि ॥
१०६ ॥ अथ अष्टनाइका निरूपणं
प्रोषित पतिका खंडिता कलहंतरिता जानि ॥
विप्रलब्ध उत्का बहुरि वासक सज्जा मानि ॥ १०७
स्वाधीन प्रियतमा पुनि अभिसारिका सुनाम ॥
कही प्रवत्स्यत्प्रेयसी आगतपतिका बाम ॥ १०८
दसौ अवस्था भेद सों दसौ नाइका जानि ॥ तिनके
लक्षण लक्ष्य अब सबही कहत बखानि ॥ १०९
अथ प्रोषित पतिका ॥ जाको पीउ विदेश में
बिरह विकल तिय होय ॥ प्रोषित पतिका नाइ
का ताहि कहत सब कोय ॥ ११० ॥ अथ मुग्धा
प्रोषित पतिका ॥ यथा ॥ बारकि तेक सहेलि
न के कहे कैसेहू लेति न बीरी सम्हारी ॥ राखति रो
कि कहै मतिराम चलैं अंसुवा अंखियानि तें भारी
प्रान पियारो चल्यौ जबतें तबतें कछू औरही रीति
निहारी ॥ पीरी जनावति अंगनि में कछू पीर जना
वति काहे न प्यारी ॥ १११ ॥ दोहा ॥ पिय बिये

गहुग जलधि निधि जल तरंग अधिकाइ ॥ बरु
णिमूल वेला परसि बहुरो बहुरि बिलाइ ॥ ११२
अथ मध्या प्रोषितपतिका ॥ चन्द्र के उदोत
होत नैन चंद्र कंत कंत आयो परदेश देह दाहनि
दहतु है ॥ उसीर गुलाबनीर करपूर परसत बिर
हअनलज्वाल जालनि जगतु है ॥ लाजनि ते
कछू न जनावै काहू सखिन को उर को उदारि
अनुराग उमगतु है ॥ कहा करौं मेरी बीर उठी
है अधिक पीर सुरभि समीर सीरो तीर सो लगतु
है ॥ ११३ ॥ दोहा ॥ वहू दूबरी होति कत यों चू
क्यो जब सासु ॥ ऊतरु कढ्यौ न बाल मुख ऊँचो
लयो उसासु ॥ ११४ ॥ अथ प्रौढ़ा प्रोषितपति
का ॥ विरह तिहारे लाल विकल भई है बाल
नींद भूख प्यास सिगरी बिसारियति है ॥ चोरी
की सी बात चंद्रमा हूं ते चुराइयति बसननि ता
नि के बयारि वारियति है ॥ कवि मतिराम कला
धर की सी कला छीन जीवन विहीन मीन सी नि
हारियति है ॥ बार बार सुकुमारि फूल की सी
माल बाल मार के मरोरनि मरोरि मारियति है
११५ ॥ दो० ॥ चंद किरनि लगि बाल तन

उठति आंच यों जागि ॥ दुपहर दिनकर कर परसि ज्यों दरपन में आगि ॥ ११६ ॥ अथ परकीया प्रोषित पतिका ॥ यथा ॥ ह्यां मिलि मोहन सों मतिराम सु केलि करी नित आनंद वारी ॥ तेऊ लता द्रुम देखत दुःख चले अंसुवा अंखियान तें भारी ॥ आवति हौं जमुना तट कौं नहिं जानि परै बिछुरे गिरधारी ॥ जानत हौं सखी आवन चाहत कुंजनि तें कढि कुंज बिहारी ॥ ११७ ॥ दोहा ॥ लाज छुटी गेहौ छुट्यौ सुख सों छुट्यो सनेह ॥ सखि कहियो वा निठुर सों रही छूट बे देह ॥ ११८ ॥ अथ गनिका प्रोषित पतिका ॥ यथा ॥ आली सिंगारति है हठ सों पहिलागन अंग अंगार सिंगारो ॥ पीरी परी तन में मतिराम चले अंखियानि ते नीर पनारो ॥ सोऊ नहीं मन आवत नाम को आवत जो बहु ते धन वारो ॥ वार बिलासिनि को बिसरै न विदेश गयो पिय प्राण पियारो ॥ ११९ ॥ दोहा ॥ धन के हेत बिलासिनी रहै संचारे वेस ॥ ओ तिय के मन में बसै सो पिय बसे बिदेस ॥ १२० ॥ अथ खंडिता लक्षण ॥ पिय कें औरे नारि

के रति के चिन्ह निहारि ॥ दुखित होइ सो खं
डिता बरणत कबि निरधारि ॥ २२१ ॥ अथ
मुग्धा खंडिता ॥ यथा ॥ लाल तुम्हें कहू
औरतिया के लख्यो अंगिया में लगावत चोवे
ता छिनतें मतिराम ने खेलति बूझैं सखी न हूं
के दुख गोवै ॥ लिखै कर के नख सौं पग को नख
सीस नवाइ के नीचे ही जोवै ॥ बाल नवेली न
रूसनो जानति भीतर भौन असोसनि रोवै ॥
२२२ ॥ दोहा ॥ बाल सखिन की सीखतें मान न
जानति ठानि ॥ पिय बिनु आगम भवन में बैठी
भौंहनि तानि ॥ २२३ ॥ अथ मध्या खंडिता ॥
यथा ॥ जावक लिलार ओंठ अंजन की लीक
सोहै खैयेन अलीक लोक लीक न बिसारिये
कबि मतिराम छाती नखछत जगमगे डगमगे
पग सूधे मग में न धारिये ॥ कस के उघारत हौ प
लक पलक यातें पलिका पै पौढ़ि श्रम राति
को निवारिये ॥ लटपटे पेंच सिर बात न कहत
बने लटपटे पेंचु सिर पाग के सुधारिये ॥ २२४
दो० ॥ कोऊ करौ कितेक यह तजै न टेक गुपाल
निशि औरनि के पग परो दिन औरनि के लाल ॥

१२५ ॥ अथ प्रौढा खंडिता ॥ यथा ॥ प्रीतम
आए प्रभात पिया मुसिक्याति उठी दृग सों दृग
जोरे ॥ आगे ह्वै आदर कै मतिराम कहै मृदु बै
न सुधारस बोरे ॥ ऐसे सयान सुभाव नहीं सो मिलें
मन भावन को मन भोरे ॥ मान गए जानि सुजा
न तबै अंगिया की तनी न छुटै जब छोरे ॥ १२६
दो० ॥ आदर करि पिय सों मिली मन में राखि
सयान ॥ दृढ़ करि बांधी कंचुकी समुझायो मन
मान ॥ १२७ ॥ अथ परकीया खंडिता ॥ य
था ॥ रावरे नेह कों लाज तजी अरु गेह के का
ज सबै बिसराये ॥ डारि दियो गुरु लोगनि को
डरु गांउ चवाइ से नाउ धराये ॥ हेत कियो ह
म जो लौ कहा तुम सौं मतिराम सबै बिसराये
कोऊ कितेक उपाइ करौ कहुं होत हैं आपने
पीउ पराये ॥ १२८ ॥ दोहा ॥ हम सौं तुम सौं
लाल यह नैननहीं को नेह ॥ उत प्यारी के दृ
गनि के सलिल सींचियति देह ॥ १२९ ॥ अथ
गनिका खंडिता ॥ यथा ॥ ह्यां हम सों मि
लिबो ठहराइ के सैन कहूं अनतै निशि कीजे ॥
भोर हीं आइ बनाइ के बातनि चातुर ह्वै दिनतें

बहु कीजै ॥ ऐसीही रीति सदा मतिराम सुकैसे
तुम्हें पिय प्रेम पतीजे॥ सौंह न खाइये जाइये यहां
ते न मानिहौं तौहूं जो लाखनि दीजे ॥१३०॥ दो०
कंत कहा सौंहनि करौ जानि पर्‌यौ अब नेह॥ देन
कह्यौ सो बिन दये जान न पैहौ गेह॥१३१॥
अथ कलहांतरिता॥ दो०॥ हारे मान मनाय
यौं नहिं माने परिनाम॥ पिय रूसे पछिताय सो
कलहांतरिता बाम॥१३२॥ मुग्धा कलहांतरि
ता॥ यथा॥ गौने की चूनरि वैसी यहै दुलही
अबही ते छिंगाइ बिगारी॥ वेऊ मनो बनि आए
हैं आपने हाथ सो जाति न पाग संभारी॥ पाइ
परे मति राम लला मनुहारि करी करजोरि हू
हारी॥ आपुही मान्यो मनायो न काहू को आपु
ही खानि न पान पियारी॥१३३॥ दोहा॥ आ
ई गौने काल्हि ही सीखी कहां सयान॥ अबही
ते रूसन लगी अबहीं ते पछितान॥१३४॥
मध्या कलहांतरिता॥ यथा॥ पांइ परे तौ
परेई रहें अरु केती करी मनुहारि सु भेली॥
मान्यो मनायो न मैं मतिराम गुमान में ऐसी भ
ई अलवेली॥ प्यारो गयो दुख मानि कहौ

अब कैसे रहौं इहि राति अकेली ॥ आपु नेल्या
उ बुलाइ कन्हाई को मेरो न लीजियो नाम सहे
ली ॥ १३५ ॥ दोहा ॥ जो तू कहै तो राधिके पि
यहि मनावन जांउ ॥ उहां लेउंगी जाइ के सखी
तिहारो नाउं ॥ १३६ ॥ अथ प्रौढा कलहांन
रिता ॥ यथा ॥ ठाढे भये कर जोरि के आगे
अधीन ह्वै पाइन सीस नवायो ॥ केती करी
विनती मतिराम पै मैं न कियो हठ ते मन भायो
देखत ही सिगरी सजनी तुम मेरे तौ मान मह
मद छायो ॥ रूठि गयो उठि प्रान पियारो कहा
कहियै तुम हूं न मनायो ॥ १३७ ॥ दोहा ॥
प्रीतम जब पायन पर्यौ तब अति भई सरोष।
कह्यौ न मान्यौ आपु ही हमैं दीजियत दोष॥१३८
अथ परकिया कलहांतरिता ॥ यथा ॥ जा
के लिये ग्रह को तज्यु काज न सीखी सखीन की
सीख सिखाई ॥ बैर कियो सिगरे ब्रज गांउ सो
जाके लिये कुल कानि गंवाई ॥ जाके लिये घर
बाहिर हू मतिराम रह्यौ हंसि लोग चवाई ॥
ता हरि सों हित एकहि बार गंवारि मैं तोरत
बार न लाई ॥ १३९ ॥ दोहा ॥ जोरत हू

सजनी विपति तोरत विपति समाज ॥ नेह कियो विनु काज पुनि नेह कियो विनु काज ॥ १४०॥ अथ गनिका कलहांतरिता ॥ यथा ॥ जाते लही जग बीच बड़ाई मैं मेरे वियोग जो होतु है छीनो ॥ मोहि गनै मतिराम जो प्रान के मेरे सदा ही रहै जो अधीनो ॥ मेरे लिये नित ही उठि के गहनो जु गढ़ाइ के ल्यावै नवीनो ॥ प्रान पियारे सो पाइनि लाग्यौरी मैं हंसि कंठ लगाइ न लीनो ॥ १४१॥ दोहा ॥ जासों कियो सनेह मन रही न एकौ साध ॥ तासों भई सरोष हौं सजनी विनु अपराध ॥ १४२॥ अथ विप्रलब्धा वर्णन ॥ लखै न पियहि सहेत में होय विकल जो बाल ॥ विप्रलब्ध सो कहत हैं जे कवि सुमति रसाल ॥ १४३॥ अथ मुग्धा विप्रलब्धा ॥ आलिन कै सुख मानिवे को पिय प्यारे की प्रीति गई चलि वागै ॥ छाइ रह्यो हियरा दुख सो जब देख्यो न ह्वां नंदलाल सभागे ॥ काहू सों बोल कछू न कह्यो मतिराम न चित्त कहूं अनुरागे ॥ खेलति खेल सहेलिन में पर खेलु नवेली को जेलु सो लागै ॥ १४४॥ दोहा ॥ लख्यो न कंत

सहेट में लख्यौ न खत को राय ॥ नवल वाल को कम
ल सो गयो वदन कुम्हलाय ॥ १४५ ॥ अथ मध्या
विप्रलब्धा ॥ यथा ॥ केलि के मंदिर देख्यौ न
लाल को वाल के दाहनि अंग दहे हैं ॥ भौंह च
ढ़ाइ सखी त्यों लख्यौ मतिराम कछू न कुबोल
कहे हैं ॥ भूलि हुलास विलास गये दुख आं
खिनि ते अंसुवा उमहे हैं ॥ ईछनि छोरनि तें न
गिरे मनो तीछनि छोरनि छेदि रहे हैं ॥ १४६
दोहा ॥ तिय को मिल्यौ न प्राण प्रिय सजल जल
द तन मैन ॥ सजल जलद लखि के भये सजल ज
लदसे नैन ॥ १४७ ॥ अथ प्रौढा विप्रलब्धा ॥
सकल सिंगार साजि संग लै सहेलिन कौं सुंदरि
मिलन चली आनंद के कन्द कों ॥ कहै मतिरा
म मन करत मनोरथन देख्यौ परिजंक में न प्या
रे नदनंद कों। नेह ते लगी है देह दाहन दहन
गेह बाग के विलोकि द्रुम वेलिन के वृन्द कों।
चन्द कों हंसत तव आयो मुखचंद अब चन्द ला
ग्यौ हंसन तिया के मुखचन्द कों ॥ १४८ ॥ दो०
लख्यौ न मंदिर केलि के पिय रुचि विजित अनंग
नैन करनि ते जल वलय गिरे एकही संग ॥ १४९ ॥

अथ परकीया विप्रलब्धा ॥ यथा ॥ चली मतिराम
आन प्यारे को मिलन घात नेसिक हारि के बिसारि
काज घर को ॥ पियरो बदन दुख हियरा समाइ रह्यो
कुंजनि में भयो न मिलाप गिरधर को ॥ बिसरे बिला
स वे बिलाइ गए हास छायो सुंदरि के तन में प्रताप
पंच सर को ॥ तीछन जुन्हाई भयो ग्रीषम को घाम
भयो भीषम पियूष भानु भानु दुख हर को ॥ १५०
दोहा ॥ साहस करि कुंजनि गई लख्यो न नंद
किसोर ॥ दीपशिखा सी थरहरी लगै बयारि झ
कोर ॥ १५१ ॥ अथ गनिका विप्रलब्धा ॥ यथा
बार विलासिनि कोटि हुलास बढाइ के अंग
सिंगार बनायो ॥ प्रीतम गेह गई चलि के मति
राम तहां न भयो मन भायो ॥ संग सहेली सों
रोष कियो नहिं आपुन कों यह दोष लगायो ॥
हाइ में कीनो मतो यह कौन जु आपने भौन न
बोलि पठायो ॥ १५२ ॥ दोहा ॥ मोहिं पठायो
कुंज में सखि आयो नहिं आपु ॥ आली औरहु
मीत सों मेरो मिल्यो मिलापु ॥ १५३ ॥ अथ उ
त्कंठिता वर्णनं ॥ दो० ॥ आपु जाइ संकेत में
पीउ न आयो होय ॥ ताकी मन चिंता करै उत्क

जानो सोय ॥ १५४ ॥ अथ मुग्धा उत्का ॥
यथा ॥ बीति गई जुग जाम निशा मतिराम
मिटी तम की सरसाई ॥ जानति हौं कहुं और
तिया सों रह्यौ रमि के रस सों रसिकाई ॥ सोच
ति सेज परी यों नवेली सहेली सों बात न जात
सुनाई ॥ चंद चढ्यौ उदयाचल पै मुख चंद
पै आनि चढ़ी पियराई ॥ १५५ ॥ दोहा ॥
कित न कंत आयो सखी लाज नि बूझि सकै न।
नवल बाल पलिका परी पलक न लागत नैन ॥१५६
अथ मध्या उत्का ॥ यथा ॥ बारहि बार बिलो
कति द्वारहि चौंकि परै तृण के खरकेहूं ॥ सेज
परी मतिराम बिसूरति आई अहो अबहीं लखि
मैंहूं ॥ संग सखानि के खेलत हौं अजहूं रजनीप
ति के अथयेहूं ॥ लालन देगि न जाऊ अबै फिर
बाल न मानि है पांय परेहूं ॥ १५७ ॥ दोहा
कहां रह्यौ आयो सखी पीउ पहर जुग मैं न ॥
अधनिकरे अखरा कढे बाल बदन ते बैन। १५८
अथ प्रौढा उत्का ॥ यथा ॥ कैयो घरी नि
शि बीति गई अरु मेह चहूं दिशि आयो उनै
है ॥ अंग सिंगार सिंगारि के सांवरे रावरी बाट

विलोकति ह्वै है ॥ वैठे कहा मतिराम रसाल हौ राति मनावन ही पुनि जैहै ॥ जाहु न वेगि निहारी पियारी सुदोष विहारी हमैं पुनि देहै। १५९॥ दोहा॥ पीउ न आयो ध्यान करि मूंदे लोचन वाल ॥ पलक उघारैं पलकमें आयो होय न लाल ॥१६०॥ अथ परकिया उत्का यथा॥ जमुना के तीर बहै सीतल समीर जहां मधुकर मधुर करत मंद सोर हैं॥ कवि मतिराम तहां छबि सों छवीली वैठी अंगनि तें फैलत सुगंधके झकोर हैं ॥ प्रीतम विहारी की निहारिवे कों बाट ऐसे चहूं दिशि दीरघ दृगनि करी दौर है॥ एक ओर मीन मनों एक ओर कंज पुंज एक ओर खंजन चकोर एक ओर है॥ १६१॥ दो०॥ कंत बाट लखि गेह की कुंज देहरी आइ ऐहैं पीउ विचारि यों नारि फेर फिर जाइ॥ १६२ अथ गनिका उत्का॥ यथा॥ प्रीतम को करि ध्यान घरीक करै मन ही मन काम कलोलैं ॥ पातहू के खरके मतिराम अचानक ही पलकैं पुनि खोलै॥ वालम ऐहैं अज्यो सजनी अंगराइ जंभाइ घरीक यों बोलै॥ गावै घरीक हरें हरें गीत अरु

वाग के गेह हरें हरें डोले ॥ १६३॥ दोहा ॥
दार बधू पिय पंथ लखि अंगरानी सुख मोरि
पौढ़ि रही परजंक में डारी मदन मरोरि॥ १६४
अथ वासक सज्जा वर्णन ॥ दोहा ॥
ऐहैं प्रीतम आज यों निहचे करै जो बाम ॥ सा
जे सकल सिंगार सो वासक सज्जा नाम ।१६५
मुग्धा वासक सज्जा ॥ यथा ॥ भई है सया
नी तरुणाई अधिकानी प्रीति प्रीतमें पत्यानी
डर लाज दूरि नाखिये ॥ कवि मतिराम काम
केलि की कलानि करि मोहन लला को बसकि
यो अभिलाषिये ॥ मृदु मुसिक्याइ परिजंक में
निसंक जाइ अंक भरि आनंद अधर सुधा रस
चाखिये ॥ नेवर की झनक तनक रस राखि प्यारी
रसना की झनक तनक रस राखिये ॥ १६६॥
अथ मध्या बासक सज्जा ॥ यथा ॥ केसरि
कनक कहीं चंपक बरन कहीं दामिनी यों दुरि
जाति देह की दमक तें ॥ कवि मतिराम लोने
लोचन लपेटे लाज अरुण कपोल काम तेज
की तमक तें ॥ पग के धरत कल किंकिणी
नेवर बजैं बिछिया झनकि उठे एकही जमक तें।

नाहसुख चाहि चित शोचको हंसति चौकि परे चंद मुखी निज चौका की चमक तें ॥ १६८ ॥ दोहा ॥ निशि नियराति निहारियत सौंनि बदन अरबिंद ॥ सखी एक यह देखिये तेरो आनंद इंद ॥ १६९ ॥ अथ प्रौढ़ा बासक सज्जा ॥ यथा ॥ बारनि धूपि अंगारनि धूपि के धूम अंध्यारी पसारी महा है ॥ आनन चंद समान उयो मृदु मंद हंसी मनो जोन्ह छटा है ॥ फैलि रही मति राम जहां तहां दीपति दीपनि परभा है ॥ लालतिहारे मिलाप कौ बारनै आजु करी दिन ही में निशा है ॥ १७० ॥ दोहा ॥ सब सिंगार सुंदर सजे बैठी सेज बिछाइ ॥ भयो द्रौपदी को बसन बासर नहीं बिहाइ ॥ १७१ ॥ अथ परकीया बासक सज्जा ॥ यथा ॥ सांझहि ने करि राखे सबै करिबे के जे काज हुते रजनी के ॥ पौढ़ि रही उमगे अति ही मतिराम अनन्द अमातन ही के ॥ सोवत जानि के लोग सबै अधिकाने मिलाय मनोरथ पी के ॥ सेज ने बाल उठी हरुयें हरुयें पट खोलि दिये खिड़की के ॥ १७२ ॥ दोहा ॥ मनभावन के मिलन को करै मनोरथ नारि ॥ धरै पौन के सामुहें दिया भौन को बारि ॥ १७३ ॥

अथ गनिका बासक सज्जा ॥ यथा ॥ स्वेत सारी
सोहति उज्यारी सुखचंद कैसी महलनि मंद मुसक्या
निकी महमही ॥ अंगिया के ऊपर ह्वै उमगें उरोज जोति
उर मतिराम माल मालती डहडही ॥ मांजे मंजु मुक
र से अमल कपोल गोल गोरी की निकाई गोरे गात
नि गहगही ॥ फूलनि की सेज बैठी दीपति फैलाइ
लाइ बेली को फुलेल फूली बेली सी लहलही ॥
१७४ ॥ दोहा ॥ सुंदरि सेज संवारि के साजे सकल
सिंगार ॥ द्रुग कमलन की द्वार पर बांधी बंदनवार।
१७५ ॥ अथ स्वाधीन पतिका बर्णन ॥ दोहा
सदा रूप गुन रीझ पिय जाके रहे अधीन ॥ स्वाधीन
प्रीतम नाम सो बरणत कवि परबीन ॥ १७६ ॥ मु
ग्धा स्वाधीन पतिका ॥ यथा ॥ आपने हाथ सों
देत महावर आपुही बार संभारत नीके ॥ आपुन ही
पहिरावत आनि के हार संभारि के मौलसिरी के ॥ हौं
सखि लाजनि जाति गड़ी मतिराम स्वभाव कहा कहौं
पी के ॥ लोग सबै मिलि घैरु करै अब ही ते ये चेरे
भये दुलही के ॥ १७७ ॥ दोहा ॥ अंग अंग अव
लोकि के तिय तन जोबन जोति ॥ सुधा सिंधु अव
गाह सुत दीठि नाह की होति ॥ १७८ ॥ मध्या

स्वाधीन पतिका ॥ यथा ॥ जगमग जोबन अनूप तेरो रूप चाहि रति ऐसी रंभासी रमासी बिसराइये देखिबे को प्राणप्यारी पास खडो प्राण प्यारो घूंघट उघारि नेकु बदन दिखाइये ॥ तेरे अंग अंग में मिठाई औ लुनाई भरी मतिराम सुकबि प्रगट यह पाइये ॥ नायक के नैननि मैं सींचिये सुधासी सब सौतिन के लोचननि लोन सो लगाइये ॥ १७९ ॥ दो० बड़े आपने दृगनि सों तुम कहि सकै सुमैन ॥ पिय नैननि भीतर सदा बसत तिहारे नैन ॥ १८० ॥

प्रौढ़ा स्वाधीन पतिका ॥ यथा ॥ लालन मैं रतिनायक तैं शुभ सुंदरता रुचि पुंज बिशेषी ॥ बाल मैं त्यों मतिराम कहै रति तें अति रूप कला अवरेषी ॥ सामुहे बैठे लखे इक सेज मैं बोली भली छबि पुंज सुबेषी ॥ भाल मैं तेरे लिख्यो बिधि सो यह लाल की मूरति लाल मैं देषी ॥ १८१ दोहा ॥ सुधा मधुर तेरो अधर सुबरन सुमन सुगंध पीय जीय को बंधु है बंधुजीव को वंध ॥ १८२ ॥

अथ परकीया स्वाधीन पतिका ॥ यथा ॥ मो जुग नैन चकोरनि को यह रावरो रूप सुधा ही को नैसो ॥ कीजै कहा कुल कानि मे आनि परयौ

अपनो अब प्रेम छिपैवो ॥ कुंजनि में मतिराम कहूं निशि द्यौस हू घात परै मिलि जैवो ॥ लाल सयानी अलीनि के बीचनि वारिये ह्यां की गलीनि को ऐवो ॥ १९३ ॥ दोहा ॥ विषम लोग ब्रज गांउ के लाल विलोकौ बास ॥ बढि गैदै इन दृगनि ते हासहि ते उपहास ॥ १९४ । अनिका स्वाधीन पतिका ॥ यथा ॥ आपुहि पान खवावत आनि सहेली न आवन पावति नेरे ॥ भूषण अंबर ल्यावत आपु रहै पहिरावन को मुख हेरे ॥ पूरि रहे मन भावन के गुण मान को ठौर नहीं मन मेरे ॥ का पिय सौं रिस कैसे करौं मतिराम कहैं सिखयें सखि तेरे ॥ १९५ ॥ दोहा ॥ मोहि लग्यौ सजनी सदा जाको धन मन प्रान ॥ सपनेहू ता पीय सों मान भलो न सयान ॥ १९६ ॥ अथ अभिसारिका वर्णन ॥ दो० ॥ पियहि बुलावै आपु कै पिय पै आपुहि जाय ॥ ताहि कहत अभिसारिका जे प्रवीन कबिराय ॥ १९७ ॥ मुग्धाभिसारिका । यथा बातनि जाइ लगाइ लई रसही रस कै मनु हाथ कै लीनो ॥ लाल तिहारे बुलावन कौ मतिराम मैं बोलु कह्यौ परवीनो ॥ वेगि चलौ न विलंब करौ लखौ

बाल नवेली को नेह नवीनो ॥ लाज भरी अंखियां वि
हंसी चलि बोल कहे बिनु ऊतर दीनो ॥ १८८ ॥ दो०
अली चली नवलाहि लै पिय पै साजि सिंगार ॥ ज्यों
मतंग अडदार कौ लिये जातु गडदार ॥ १८९ ॥ अ
थ मध्या भिसारिका ॥ यथा ॥ वै बिहरैं मति
राम लला घर भीतर सांझहि ते अनुरागी ॥ बानिक
सौं बनि चारु सिंगार नि आई सुहागिल प्रेम सौं पागी
प्यारे कही हंसि आइये सेजहि प्यारी की जोति वि
लासनि जागी ॥ नैनन वाहु रही सुसक्याइ कै द्वार
हिये को संचारन लागी ॥ १९० ॥ दो० ॥ जोवनमद
गज मंद गति चली बाल पति गेह ॥ पगनि लाज ।
आडी परी चढ्यौ महावत नेह ॥ १९१ ॥ प्रौढा भिसा
रिका ॥ यथा ॥ सहज सुबास युत देह की दुगुन
दुति दामिनी दमक दीप केसरि कनक तें ॥ कवि
मतिराम सुकवि सुमन सुकुमारन अंग सोहत सिं
गार चारु जोवन बनक तें ॥ सोइवे को सेज चली आ
ए प्यारे पास जग मग निजुन्हाई नेक हंसनि तनक तें
चढ़नि अटारी गुरु लोगनि की लाज प्यारी रसना द
सन दाबै रसना झमक तें ॥ १९२ ॥ दोहा ॥ सजि
सिंगार सेजहि चली बाल प्राण पति मान ॥ चढ़ति

अंधारी की सिढ़ी भई कोस परिमान ॥ २९३॥
अथ परकीया अभिसारिका ॥ यथा ॥ उमड़ि
घुमड़ि दिग मंडलनि मंडि रहे झूमि झूमि बादर कु
हू की निशि कारी में ॥ अंगनि में कीने मृगमद अंग
राग तिसे आनन ढांपि लीनो उढाइ लीनो स्याम रंग
सारी में ॥ कवि मतिराम सुमेचक रुचि रचि रही
आभरन राजि मरकत मनि वारी में ॥ मोहन छबी
ले को मिलन चली ऐसी छबि छाइ सों छबीली छ
बि छाजति अंध्यारी में ॥ २९४॥ दो० ॥ स्याम बसन
में स्याम निशि दुरी न तिय की देह ॥ पहुंचाई चहुं
ओर तें भौर भीर पिय गेह ॥ २९५॥ चंद्राभिसारि
का यथा ॥ अंगन सघन घनसार ही को अंगरा
ग सेत सारी फेन की सी आभा उफनाति है ॥ राज
त रुचिर रुचि मोतिन के आभरन कुसुम कलित
केश सोभा सरसाति है ॥ कवि मतिराम प्रान प्यारे
कों मिलन चली करि के मनोरथनि मृदु मुसका
ति है ॥ होति न लखाइ निशि चंद की उजारी मुख
चंद की उजारी तन छाहीं छिपि जाति है ॥ २९६॥
दोहा ॥ मलिन करी हरि चन्द की तन छबि सों
बलि सांझ ॥ क्यों जैहै पिय पै सखी लखि जैहै स

ब गाँउं १९७ ॥ दिवाभिसारिका ॥ यथा ॥
सारीजरतारी की झलक झलकति तैसी केस
रि को अंगराग कीने सब अंग में ॥ तीखन तरनि
करनि तें दुगुन दुति जटित जवाहर जगत आभ
रन में ॥ कबि मतिराम आभा अंगनि अंगार कै
सी धूम कीसी धार छबि छाजत कचन में ॥
ग्रीषम दुपहरी में हरि कों मिलन जाति जानी
जाति नारि नदवार खुलदन में ॥ १९८ ॥ दोहा
सारीजरतारीन सै केसरि को अंगराग ॥ जाति
मिलन हरि को मनो ग्रीषम दव जुत राग ॥ १९९
ग्रीषम ऋतु की दुपहरी चली बाल बन कुंज ॥
आगिल पद तीषन लुवै मलय पवन के पुंज २००
अथ गनिकाभिसारिका ॥ यथा ॥ अंग
हि सिंगार साजि चली प्रानप्यारे पास बनिता
बनक बनी बेलि ज्यों अनंद की ॥ कबि मतिराम
कल किंकिनि की बाजै धुनि मंद मंद चलनि
बिराजत गयंद की ॥ केसरि रंग्यौ दुकूल हां
सी में झरत फूल केसनि में छाई छबि फूलन
के वृंद की ॥ पाछें पाछें आवति अंध्यारी सी भं
वर भीर आगे आगे फैलति उज्यारी मुख चंद की।

२०१ ॥ दोहा ॥ नागरि सकल सिंगार सजि चली
प्रानपति पास ॥ बाढ़ि चली विहसनि मनों शो
भा सहज सुवास ॥ २०२ ॥ अथ प्रवत्स्यत्पति
का वर्णन ॥ दोहा ॥ होनहार पिय के विरह
विकल होइ जो बाल ॥ ताहि प्रवत्सपति प्रेयसी
वरणत बुद्धि विसाल ॥ २०३ ॥ मुग्धा प्रवत्स्य
त्पतिका ॥ यथा ॥ जा दिन तें चलिवे की चरचा
चलाई तुम तादिन तें वाके पियराई तन छाई है
कवि मतिराम छोडे भूषण औ खान पान सखि
न सों बोलनि हंसनि विसराई है ॥ आई ऋतु सुरभि
सुहाई प्रीति वाके चित ऐसे में चलौ तौ लाल रावरी
बड़ाई है ॥ सोवति न रैन दिन रोवति रहति बाल
बूझे ते कहति माइके की सुधि आई है ॥ २०४ ॥
दोहा ॥ क्यों सहि है सुकुमार तन पहिलो विरह
गुपाल ॥ जब वाके चित हित चूकौ चलन लगे तब
लाल ॥ २०५ ॥ मध्या प्रवत्स्यत्पतिका ॥ यथा
गौने के द्यौस छः सातक बीते न चौथो कहूं अब
हीं इत आई ॥ लालन बाल के ताछिन ते मति राम
परी तन में पियराई ॥ तू न बहू को पठाइ अरी यह
देखि दुहून की प्रीति सुहाई ॥ रोये सौं रोचन मोये

सो लोचन सोएन सोचन राति बिताई ॥ २०६ ॥ दो० अबहीलै मिलि मोहि सखि चलत आजु ब्रजराज। अंसुवनि राखति रोकि कै पियहि निकारति लाज॥ २०७ अथ प्रौढ़ा प्रवत्स्यत्पतिका यथा ॥ मलय समीर लागे चलन सुगंध सीरे पथिकनि कीने परदेसनि तें आवने ॥ कबि मतिराम सुकबि समूहनि सुमन फूले कोकिल मधुप लागे बोलनि सुनावने ॥ आयो है बसंत भये पल्लवित सरोज तुम या तें लगे चलिबे की चरचा चलावने ॥ राव रीति या कौं तरवर सरवरनि के किशले कमल ह्वै हैं बारकविछावने ॥ २०८ ॥ दो० ॥ कोपनितें किशलय जवै होंहि कलिन ते कौल ॥ तब चलाइये चलन की चरचा नाइक नौल ॥ २०९ ॥ अथ परकीया प्रवत्स्यत्पतिका ॥ यथा ॥ मोहन लला कौ सुन्यौ चलन विदेश भयो मोहनी तिया को चित निपट उचाट में ॥ परी तला बेली तन मन में छबीली राखै छिति पर छिन कु छिन कु पाउ खाट में ॥ प्रीतम नयन कुवलयन कौं चंदु घरी एक में चलैगो मतिराम जिहिं बाट में ॥ नागरी नवेली रूप आगरी अकेली रीती गागरी लै ठाढ़ी भई बाट ही के घाट में ॥ २१० ॥ दोहा ॥ चलत

सुन्यौ परदेश कों हियरा रह्यौ न ठौर ॥ लै मलिनी मी तहि दयो नव रसाल को मोर ॥ २११ ॥ अथ गनिका प्रवत्स पतिका ॥ यथा ॥ मंजन कियो न तन अंजन दियो न नैन जावक दियो न पांइ रही मतु मारि कें ॥ मतिराम सुकबि तमाल तेल छोड़ि देइ पहिरे बसन डारे भूषन उतारि कें ॥ ऐहैं पीउ आजु विदा मागन विदेश कों यौं नेह के जनाइवे कों चातुरी बिचारि कें ॥ गारि राख्यौ चंदन बिगार राख्यौ घनसार राखी शुभ्र सेज सरसिजनि बिछाइ कें २१२ अथ आगत पतिका ॥ दो० ॥ जा तिय को परदेश तें आयो पिय मतिराम ॥ ताहि कहत कबि लोग सब आगम पतिका बाम ॥ २१३ ॥ अथ मुग्धा आगत पतिका ॥ यथा ॥ आयो विदेश तें प्रानपिया मतिराम आनंद बढाइ अलेखे ॥ भीतर भौन के द्वार खरी सुकुमार तिया तन कंप विशेखे ॥ लोंगनि सों मिलि आंगन बैठि घरी ही घरी सिगरो घरु पेखे। घूंघट को पट ओट किये पट ओट किये पिय को मुख देखें ॥ २१४ ॥ दो० ॥ पिय आयो नव बाल तन बाढे हरष विलास ॥ प्रथम वारि बूंदनि उठै ज्यौं बसुमती सुबास ॥ २१५ ॥ मध्या आगत पतिका ॥

यथा ॥ चंद मुखी सजनीनि के संग कुती पिय अंगनि में मनु फेरत ॥ ताही समय पिय प्यारे को आवन प्यारी सखी कह्यौ द्वार ते टेरत ॥ आइ गये मतिराम जबै तब देखत नैन अनंद भये रत ॥ भौन के भीतर भागि गई हंसि के हरुएं हरि को मुख हेरत ॥ २१६ ॥ दो॰ पिय आगम सरदागमन विमल बाल मुख चंद ॥ अंग अमल पानिप भयो फूले दृग अरविंद ॥ २१७ ॥

अथ प्रौढ़ा आगत्त पतिका ॥ यथा ॥ प्रानपियारो मिल्यौ सपने में परी जब नेसिक नींद निहोरें कंत को आइबो त्योंहीं जगाइ कह्यौ सखी बैन पियूष निचोरें ॥ यों जिय में सुख भौं मतिराम सुबाल को बालम सों दृग जोरें ॥ ज्यों पट में अति ही चटकीलो चढ़ै रंग तीसरी बार के बोरें ॥ २१८ ॥ दोहा ॥ पति आयो परदेस ते जिय हुलसी तब काम ॥ टूक टूक कंचुकि करी करि कम नेंती काम ॥ २१९ ॥

परकीया आगतपतिका ॥ यथा ॥ आयो विदेश बिलंब कै बालम बाल वियोग जिथा बिसराई ॥ आई न हां तिनि के संग जो सब गांउ की जे युवती बनि आई ॥ देखत ही मतिराम कहै अंखियानि में आनंद की छबि छाई ॥ लाजनि क्यों करि

बैन कहै मुकह्यौ दुख देह ही की दुबराई ॥ २२०॥ यथा ॥ भावते को सुनि आवन आनंद अंगनि अंगनि में उलह्यौ है ॥ सो हमहूं सी छिनू सोहु दुराये आली कहो यह कौने कह्यौ है ॥ खैंचि लिये सुख के अंसुवा यह क्यों दुरि है जो हियो उमह्यौ है ॥ गाढे भए मुहरा दरकी अंगिया की तनीनि तनंशु गह्यौ है ॥ २२१॥ दो०॥ सुन्यो माइके ते वही ब्राह्मन आयो कंत ॥ कुशल बूझिबे के मिसनि लीनो बोलि इकंत ॥ २२२॥ गनिका आगत पतिका । यथा नागरि बिदेश में बिताइ बहु द्योस आयो नागरि के हिये में हुलासनि की खानि की ॥ कबि मतिराम अंक भरत मयंकमुखी नेह सरसाइ मोही मनि सुखदानि की ॥ सुबरन बोलि के बतावति है सुवरन हीरनि जतावति है छबि मुसिक्यान की ॥ आंखिनतें आनंद के आंसू उमगाइ प्यारी प्यारे को दिखावति है सुरति मुक्तानि की ॥ २२३॥ दोहा ॥ फूली नागरि कमलिनी उडिवो मित्र मलिंद ॥ आयो मीत विदेश तें भयो सुदिन आनंद ॥ २२४॥ अथ उत्तमादि कथनं ॥ तत्रोत्तमा लक्षणम् ॥ दोहा ॥ पिय हित कै अनहित करै आपु करै हित नारि ॥ ताहि

उत्तमा नाइका बरणन कबि निरधारि ॥ २२५ ॥
यथा ॥ राति कहूं रमिकैं मनभावन प्रात प्रिया घर
आवन कीनो ॥ देखत ही मुसक्याइ उठी चलि आगे
ह्वै आदर कै हरि लीनो ॥ मोहन के तन में मतिराम
दुकूल सुनील निहार नवीनो ॥ केसरि के रंग सों
रंगि के पट पीत कै प्रीतम के कर दीनो ॥ २२६ ॥
दोहा ॥ पिय अपराध अनेक निज आंखिन हूं लखि
जाय ॥ तिय इकंतहू कंत सों मान हि करत लजाय ॥
२२७ ॥ अथ मध्यमा ॥ दो० ॥ पिय सों हित में हि
त करै अनहित कीने मान ॥ ताहि मध्यमा कहत हैं
कबि मतिराम सुजान ॥ २२८ ॥ यथा ॥ आयो प्रा
न पति राति अनतै बिताइ बैठी भौंहनि चढाइ रंगी
सुंदरि सुहाग की ॥ बातनि बनाय परयौ प्यारी के
पगनि आइ छल सों छिपाई छलै छबि रति दाग की
छूटि गयो मान लागी आपु ही संवारन कों खिरकी
सु कबि मतिराम पिय पाग की ॥ रिस ही के आंसू
रस आंसू भये आंखिन में रोष की ललाई सो ल
लाई अनुराग की ॥ २२९ ॥ दोहा ॥ मेरे तन के दो
स ये मेरे नहीं निदान ॥ उठि आदरु आगमन कर
करौं कौन बिधि मान ॥ २३० ॥ अथ अधमा ल०

पियसों हित हू के किये करै मान जो बाल ॥ तासों
अधमा कहत हैं कबि मतिराम रसाल ॥ २३१ ॥
यथा ॥ आयो है सयान पनयो है अयान तऊ नित
उठि मान करिबे की टेव पकरी ॥ घर घर मानिनी
कहैं मानति मनाये तबै तेरी ऐसी रीति और काहू
में न जकरी ॥ कबि मति राम काम रूप घन स्याम
लाल तेरी ओर नैन कोर चाहै एक टकरी ॥ हाहा
कै निहोरे हूं न हेरति हरिन नैन काहे को करनि
हठ हरल की लकरी ॥ २३२ ॥ दोहा ॥ कहा लियो
गुरु मान में अब ताई करि नेम ॥ पारद सो उड़ि जा
इगो यह सखि चंचल प्रेम ॥ २३३ ॥ दोहा ॥ तरुण
सुघर सुंदर सरस काम कलानि प्रवीन ॥ नाइक
सो मतिराम कहि कबित गीत रस लीन ॥ २३४ ॥
यथा ॥ गुच्छनि के अवतंस लसें सिर पिच्छनि अ
च्छ किरीट बनायो ॥ पल्लव लाल समेत छरी कर पल्ल
व सों मतिराम सुहायो ॥ गुच्छनि के उर मंजुल हार
नि कुंजनि तें कढि बाहिर आयो ॥ आजु को रूप
लखे ब्रजराज को मैं सखि नैननि को फल पायो ॥
२३५ ॥ दोहा । भरी भाव सें सांवरे राउ रसिक रसजा
न ॥ उनहीं में मन भ्रमतु है ह्वै भौंडर को पान ॥ २३६ ।

अथ नायक वर्णनं ॥ तथा नायक भेद ॥ दो०
चारि भांति सो बरनिये प्रथम कहत अनुकूल ॥ द
क्षिण पुनि गनि धृष्ट शठ रस सिंगार को मूल ॥ २३७
अनुकूल लक्षण ॥ सदा आपनी नारि सों जासों
अतिही प्रीति ॥ पर नारी तें विमुख जो सो अनुकूल
सुरीति ॥ २३८ ॥ यथा ॥ क्यों हूं नहीं बिसरै निशि
बासर मंद हंसी मुख चंद उज्यारी ॥ त्योंही दिपै
अति नेह सों देह कि दीपनि दीप कला समन्यारी।
तेरी ही ज्योति जगै हिय भीतर आवति औरन नारि
अध्यारी ॥ नैननि हूं अरु बैननि हूं तनहूं मनहूं मैं
तुही अति प्यारी ॥ २३९ ॥ दोहा ॥ सपनेहूं मन भा
वतो करत नाहिं अपराध ॥ मेरे मनहीं में रही सखी
मान की साध ॥ २४० ॥ अथ दक्षिण लक्षण
एक भांति सब तियन सों जाके होय सनेह ॥ सो दक्षि
ण मतिराम कहि बरनत हैं मति गेह ॥ २४१ ॥ यथा ।
सांझ समय अबला मिलि आई खड़ो जहां नंदलला
अलबेलो ॥ खेलन कों निशि चांदनी मांहि बनै न मतो
मतिराम सुहेलो ॥ आपनी आपनी पौरि बताइके बोलु
कह्यौ सिगरीन नवेलो ॥ यों हंसि के ब्रजराज कह्यौ
अब आजु हमारिये पौरि में खेलो ॥ २४२ ॥ दोहा

दक्षिण नायक एक तुम मन मोहन ब्रज चंद॥ फूले ब्रज बनि तानि के दृग इंदी वर वृंद॥ २४३॥ अथ धृष्ट लक्षण॥ करै दोष निरसंक जो डरैं न तिय के मान॥ लाज धरैं मन में नहीं नाइक धृष्ट निदान॥ २४४॥ यथा॥ बरज्यौ न मानत हौ बार बार बर ज्यो मैं कौन काज दूत मेरे भौननि में आइये॥ लाज को न लेस जग हांसी को न डर मन हंसत हंसत नित बातन बनाइये॥ कबि मतिराम नित उठि कलकान करौ नित झूठी सोहैं करौ नित बिसराइये॥ ताके पग लागौ निशि जाके जागे उरलागि मेरे पग लागि उर लागि न लगाइये॥ २४५॥ दोहा॥ बिलज नैन कुलटानि के आनि बसे ब्रजराज॥ हिये तिहारे ते सकल मारि निकारी लाज॥ २४६॥ अथ शठल० पिय बोलै बिप्रिय करै निपट कपट युत होय॥ शठ नाइक तासों कहत कबि कोबिद सब कोय॥ २४७ यथा॥ मोतें तो कछू न अपराध पस्यो प्रान प्यारी मान कर रही यों ही काहे को असरतें॥ लोचन च कोर मेरे सीतल है होत तेरे अमल कपोल मुख चंद के दरसनें॥ कवि मतिराम कहै उठि लागि उर मेरे कंत करनि कठोर मन अंसुवा बरसतें॥ कोपतें कठोर बो

ल बोलति दैनऊ मोकों मीठें होत अधर सुधारस परस
तें॥ २४८॥ दोहा॥ पियत रहत अधरानि को रस
अति अधिक अमोल॥ तातें मीठे कढ़त हैं लाल बद
न ते बोल॥ २४९॥ अथ पति भेद॥ पति उपपति
बैशिक त्रिबिधि नायक भेद बखानि॥ बिधि सों ब्या
ह्यो पति कहैं कबि कोबिद मति मानि॥ २५०॥ यथा
पाइ धरै दुलही जेहि ठौर रहै मतिराम तहीं दृग दीने
छोड्यौ सखान के साथ को खेलिबो बैठे रहैं घर ही रस
भीने॥ सांझ ही ते ललके मन मोहन लाल भयो रस
के बस लीने॥ लोने सलोनी के सोने से अंगनि गोने
की चूनरी टोने से कीने॥ २५१॥ अथ बैसिक दो०॥
मीतभ जो गनि कानि को बैशिक ताको मान॥ जो पर
नारिन को रसिक उपपति ताहि बखान॥ २५२॥ यथा
सुंदरि सरस सब अंगनि सिंगार साजे सहज सुभावनि
सनेह कछू कै गई॥ कीनें मतिराम बिहसौंहैं से कपोल
बोल बोलनि अमोल इतनोई दुख दै गई॥ मेरे ललचौं
हैं चाहि चखमुख फेरि कें लजौंहें ललचौंहें चारु चखनि
चितै गई॥ निपट निकट ह्वै के कपट छुवाइ अंग लाइ
के सील पर लपेट मनु लै गई॥ २५३॥ नैन जोरि मुख
मोरि हंसि नेंसिक नेह जनाइ॥ आगि लेन आई दहां

मैरे गई लगाइ ॥ २५४ ॥ **वैशिक यथा** ॥ आगमनु
चाहि चक चौंधि रह्यौ तव जब जगर मगर आभरन के न
गन भो ॥ जोवन के मद रूप मद वांके नैन मद छकि मन
पारो ह्वै कै थकित पगन भो ॥ कबि मतिराम वाके लो
चन विसाल लोल तीक्षन कटाक्षनि को छेदि कें लगन
भौ ॥ बार बार भ्रमि बार बार वधू बार भौरनि में मांग की
मुकत माल गंग में मगन भौ ॥ २५५ ॥ **दोहा** ॥ लोचन
पानिप ह्वि ग सजी लट वंसी परबीन ॥ मो मन बार बि
लासिनी फांसि लियो जनो मीन ॥ २५६ ॥ **मानी** ॥ क
रत नायका सों कछू नायक जो अभिमान ॥ तासों मा
नी कहत हैं कबि मतिराम सुजान ॥ २५७ ॥ **यथा** ॥
वह सुधि करौं जड नए नलिनी दलनि सेज सीरे सर
सिज निक्षि छाइये ॥ अमल उसीर इंदु चंदन गुलाब
नीर कहां लगि औरउपचारनि गनाइये ॥ छल बल
वाको में मिलाइ कें जिवाए तब कबि मतिराम अब
साहिबी जनाइये ॥ ऐसो अनभायो मनभावन गुमा
न है जु प्यारी के मनाइवे कौ तुम कों मनाइये ॥ २५८
दोहा ॥ यामें कौन सयान है मोहन लाल सुजान ।
आपु करत अपराध हौ आपुन पुनि अभिमान ॥ २५९
वचनचतुर ॥ वचननि में जो करत हौ चतुराई मति

राम ॥ बचन चतुर नायक सरस लीजे जानि सकाम
२६० ॥ यथा ॥ दूसरे की बात सुनि परति न ऐसी
भांति कोकिल कपोत नीकी धुनि सरसाति है ॥ छा
इ रहे जहां द्रुम बेलिन सों मिलि मतिराम अलि कुल
अंधियारी अधिकाति है ॥ नरवत से फूल रहे फूलनि
के पुंज घन कुंजन में होति जहां दिनहूं में राति है ॥
ऐसे घन वन वाट संग न सहेली हाइ कैसे तू अकेली
दधि बेचन को जाति है ॥ २६१ ॥ दोहा ॥ तोकों दे
हुं बताइ हौं तू कत होति उचाट ॥ ग्वालिनि दधि बेच
न गई वंसीवट की बाट ॥ २६२ ॥ क्रिया चातुर ॥
करै क्रिया सों चातुरी जो नायक रसलीन ॥ क्रिया
चतुरता सो कहैं कबि मतिराम प्रवीन ॥ २६३ ॥ य
था ॥ नंदलाल गयो तितही चलि कै जहां खेलत
बाल अलीगन में ॥ तहां आपुहि मूंदे सलोनी के
लोचन चोरमिहीचनी खेलन में ॥ दुरिबे को गई सि
गरी सखियां मतिराम कहैं इतने छन मे ॥ मुसिक्याइ
के राधिके कंठ लगाइ छिप्यो कहूं जाइ निकुंजन में ॥
२६४ ॥ दोहा ॥ सांझ समय वा खेल की छलनि कही
नहिं जाइ ॥ विन डर वन डरपाइ के लियो मोहिं उर
लाइ ॥ २६५ ॥ अथ प्रोषित ॥ दोहा ॥

नाइक होइ बिदेश में जो बियोग अकुलाइ ॥ ता
सों प्रोषित कहत हैं जे प्रवीन कबिराइ ॥ २६६ ॥
यथा ॥ प्यार पगे बचन पियूष पान करि करि
उमगति हिय आनंद बिशेषिये ॥ कबि मतिराम
तन तपति बुझाइ जैहै तब निज जनम सुफल करि
लेखिये ॥ हीतल कों सीतल करन चारु चांदनीसी
मंद मृदु हसिकानि अनिमिष पेखिये ॥ ह्वै कै निसों
हव मेरे लोचन चकोरनि की जब वाको आनन अमल
इन्दु देखिये ॥ २६७ ॥ दोहा ॥ प्रफुलित सुमन सु
वास में करि वो आनंद केलि ॥ सोने के दिन लागि हैं
उर सोने की बेलि ॥ २६८ ॥ अथ दरशना ॥ दोहा
दरसन आलंबनहिं में कबि मतिराम बखानि ॥ श्रवण
चित्र अरु स्वप्न है पुनि प्रत्यक्ष उर आनि ॥ २६९ ॥ यथा
आनन पूरन चंद लसै अरविंद बिलास बिलोचन पे
खे ॥ अंबर पीत लसै चपला छबि अंबुद मेचक अंग
उरेखे ॥ कामहू ते अभिराम महा मतिराम हिये निह
चै करि लेखे ॥ तैं बरने निज बैननि सौं सखि मैं निज
नैननि सौं जनों देखे ॥ २७० ॥ दोहा ॥ जैसो बरन्यौ
तैं सखी रूप सांवरो आइ ॥ तैसो ही मेरे चखनि रह्यो
आनि ठहराइ ॥ २७१ ॥ अथ चित्र दर्शन ॥ यथा

अचल भये हैं गात परस न जान्यौ जात कहीन सुनति ब
तजात बात ना कही ॥ सूंघवे सुवास सुमननि की समु
झि परै टक टकी बडे बड़े दृगनि में उलही ॥ कवि म
तिराम वाहि नेक परवाहि नाहि ऐसे हाल भई वह
तेरे नेह सों नही ॥ एरे चितचोर चलि चाहि चंदमुखी
तोहि चित्र ही में चाहि चित्र चित्र ही मैं ह्वै रही ॥ २७२
दोहा ॥ चित्रहू में जाके लखें होत अनन्त अनन्द
सपनेहूं कबहूं सखी सो मिलि है ब्रज चंद ॥ २७३
अथ स्वप्न दर्शन ॥ यथा ॥ आवत में सपने हरि
कों लखि ने सिक बार सकोचनि छोड़ी ॥ आगे ह्वै
आड़े भए मतिराम चले सुचिते लखि लाल चवोड़ी ।
ओठनि को रस लेन को मेरी गही कर कंजनि कांपति
ठोढ़ी ॥ और भट्ठ न भई कछु बात गई इतने ही में
नींद निगोडी ॥ २७४ ॥ दोहा ॥ पिय मिलाप को सु
ख सखी कह्यौ न जात अनूप ॥ सो सुख सों सपनो भयो
सो सुख स्वप्न सरूप ॥ २७५ ॥ साक्षात् दर्शन । यथा
मोहन लला को मन मोहनो विलोकि बाल कछु क
रि राखति है उमग उमादे को ॥ सखिनि की डीठि को
बचाय के निहारति है आनंद अवाह वीच पावति न
थाह को ॥ कवि मतिराम और सबही के देखतहूं

ऐसी भांति देखति छिपावति उछाह कौं ॥ वेई नैन
रूखे से लगत और लोगनि कौ वेई नैन लाजत सने
ह भरे नाह कौं ॥ २७६ ॥ दोहा ॥ नन्द नन्द के रूप
पर रीझि रही रिझवार ॥ अध मूदी अंखियन दई
मूदी प्रीति उघार ॥ २७७ ॥ अथोद्दीपनं ॥ चंद
कमल चंदन अगर रितु वन बाग निहार ॥ उद्दीपन
शृंगार के ये उज्वल संभार ॥ २७८ ॥ यथा ॥ पूरन
चंद उदोत किये घन फूलि रहे वन जाति सुहाई ॥ भौं
रनि की अवली कल कै कल कैरव पुंजनि में मृदु गाई
बासुरी तानन काम के बाननि लों मतिराम सबै अ
कुलाई ॥ गोपिन गोप कछू न गनै अपने अपने घर
तें उठि धाई ॥ २७९ ॥ दोहा ॥ प्रथम काम जन मन्
नि कौं रंजन सुरभि रितु राग ॥ मंडल है नद पल्लवनि
पुनि पाछे वन बाग ॥ २८० ॥ सखी दूतिका जानियो
उद्दीपन को भेद ॥ नायक अरु नाइकनि को हरै विर
ह को खेद ॥ २८१ ॥ जा तिय सों नहिं नाइका कछू
छिपावै बात ॥ तासों बरनत कहि सखी सब कवि
मति अबदात ॥ २८२ ॥ मंडन अरु शिक्षा करन उपा
लंभ परिहास ॥ काज सखी के जानियो औरौ बुद्धि
विलास ॥ २८३ ॥ अथ मंडन ॥ यथा ॥

जावक रंग रंगो पद पंकज नाह को रंग रंगें चित जानें अंजन दै करी नैननि में सुखमा बढै श्याम सरोज प्रभा तें ॥ सोने के भूषण अंग रचौ मतिराम सबै बस कीबे की घातें ॥ यों ही चलै न सिंगार सुभावहीं ते कही भूलि सखी सब बातें ॥ २८४॥ दोहा ॥ सखी पिया की देह में सजे सिंगार अनेक ॥ कजरारी अंखियानि में भूल्यौ काजर एक ॥ २८५॥ शिक्षा ॥ यथा ॥ मल को पवन मंद मंद कै गवन लाग्यौ फूलनि के वृंदनतें मकरंद ढारने ॥ कबि मतिराम छिति छोर चारो ओर रचाहि लाग्यौ चैत चंद चारु चांदनी पसारने ॥ अलिनि की आली लाली भैंन केसे मंत्र पढि लागी मानिनीनि के मननि मान झारने ॥ सुमन सिंगार साजि सेज सुख साज करौ लाज करौ आज ब्रजराज पर वारने २८६॥ दोहा ॥ कत सजनी ह्वै अनमनी अंसुवा भरति सशंक ॥ बड़े भाग नंदलाल सों झूंठे लगत कलंक ॥ २८७॥ उपालंभ ॥ यथा ॥ पान की कहानी कहा पानी को न पान करै आहि करि उठनि अधिक उर आधिकै ॥ कबि मति राम भई बिकल बिहाल बाल राधिकै जगाइ रे अनंग अवराधिकै ॥ याही को कहा यो ब्रजराज दिन चार ही में करि दै उजारि ब्रज ऐसी

रीति नाधिकै॥ जैसें नैन मोहन बिलोक्यौ वाकी ओर ऐसें बैरीहू सों बैरी न बिलोकै बैर साधिकै॥ २८८

दोहा॥ वा को मन लीन्हे लला बोली बोल रसाल झुकली तन कहि बात मैं ललिन वेलि बर बाल॥ २८९

परिहास॥ यथा॥ गौने के द्यौस रहैं मतिराम सहेलिन को मिलि कै गन आयो॥ कंचन को बिछिया पहिरावत प्यारी सखी परिहास बढायो॥ प्रीतम श्रवन समीप सदा बजौं यौं कहि के पहिलो पहिरायो कामिनि कौल चलावन कौं कर ऊंचो कियो पै चल्यौ न चलायो॥ २९०॥ दोहा॥ भुज फुलेल लावति सखी कर चलाइ मुसिक्याइ॥ बाढी कोर उरोज तिय बिहंसी भौंह चढाइ॥ २९१॥ अथ दूती वर्णन॥ निपुण दूतत्व मैं सदा दूती ताहि बखानि॥ उत्तम मध्यम अधम कै तीनि भांति उर आनि॥ २९२॥

अथ उत्तम दूती लक्षण॥ मोहै जो मन बोलि कै मधुर बचन अभिराम॥ ताहि कहत कबिराज हैं उत्तम दूती नाम॥ २९३॥ यथा॥ जा दिन ते देखे मतिराम तुम ता दिन ते चढी रहै मुसिक्यानि वाके हियरा ही पर॥ भावतु न भोजन बसनावलि न आभरन देतु न करति सुधा निधि सियराई पर॥ चलौ उठि देखौ बड़े भाग है निहारे

अबराधौ धारै राधिकै कन्हाई जियराई पर ॥ दूनी द्युति छाई देह आई दुदराई पियराई लोन वाही पै पिया की पियराई पर ॥ २९४ ॥ दोहा ॥ तिय के हिय को हनन को भयो पंच शर बीर ॥ लाल तुम्हें बस करन कों रहे न तरकस तीर ॥ २९५ ॥ अथ मध्यम दूती ॥ कछू बचन हित के कहै बोलै अहित कछूक मध्यम दूती कहत हैं तासों सुकबि अचूक ॥ २९६ ॥ यथा ॥ चरन धरै न भूमि बिहरै न हांई जहां फूले फूले फूल नि बिछायो परयंक है ॥ भार के डरनि सुकुमार तन अंगनि में करति न अंगराग कुंकुम को पंक है ॥ कबिमति राम देखि बातयन बीच आयो आतप मलीन होत बदन मयंक है ॥ कैसे वह बाल लाल बाहिर बिजन आवै बिजन बयारि लागै लचकत लंक है ॥ २९७ ॥ दोहा ॥ रीझि रही रिझवार वह तुम ऊपर ब्रज नाथ ॥ लाज सिंधु की इंदिरा क्यों करि आवै हाथ ॥ २९८ ॥ अथ अधम दूती ॥ अध मदूतिका जानिये बचन कहै सतराइ ॥ ग्रंथनि को मत देखि के बरनत सब कबि राइ ॥ २९९ ॥ यथा ॥ जानत कछू न पै कहावत रसिक राइ ल्याउ ल्याउ अब कीं तुम्हारे यह टेक है ॥ कूरनि की रीति है

जुडेलु ऐसो डारि देत मतिराम चतुर तू चतुराई लि
ये क है ॥ बोली है लुन बोलु कछू बोलु सतराइ का
मनसिज ओज को सुहानो नेकु सेकु है ॥ मात के
कहत अलसात जंसुबातजान सोंहे भये लोचम्न
एसोंहे भये नेकु है ॥ ३००॥ दोहा ॥ जोबनमंडित
आपने अन्योनजानत गात ॥ तो चित में अनिच्छ
पटी निपट अटपटी बात ॥ ३०१ ॥ अथ भाव
लक्षण॥ जिन ते चित रति भाव को आछो अनु
भव होइ॥ सो सिंगार अनुभाव ते बरनत कबिस
ब कोइ॥ ३०२॥ लोचन बचन प्रसाद मृदुहा
स हाव घन मोद॥ इनते प्रगटत भावरति बरन
त सुकबि बिनोद॥ ३०३॥ कबित्त ॥ गहि हाथ
सों हाथ सहेली के साथ में आवतिही वृषभानल
ली॥ मतिराम सुबासतें आवति नीरें निवारति भौं
रनि की अवली ॥ लखि के मनमोहन को तकुची
करयौ चाहत आपनी ओट अली॥ चित चोर लि
यो दृगजोरि तिया मुख मोरि कछू मुसिकाय
चली ॥ ३०४॥ दोहा ॥ सहज बात बूझत
कछू बिहंसि नवाई ग्रीव ॥ तरुन हिये तरुतनी द
ई नई नेह की नीव॥ ३०५॥ अथ सात्विकभाव

+

स्तंभ स्वेद रोमांच स्वरभंग कंप वैवर्ण ॥ आंसू प्रलय
जु कहे आठौ ग्रंथनि वर्ण ॥ ३०६ स्तंभ ॥ लज्जा
हर्षादिकनि तें अचल होत जहँ अंग ॥ स्तंभ क
हत हैं तासु को जे प्रवीन रस रंग ॥ ३०७ ॥ यथा
देखत ही मतिराम रसी ले गही मति प्यारी के प्रेम
निगाढ़ी ॥ चाहि वे की चित चाह भई पै गई हि
य ते कुल कानि न काढ़ी ॥ संग सखीनि के आनि
दुरावति आनन आनंद की छबि बाढ़ी ॥ पाइ परे
मग में नभरू कै भई मिस लाजनि के थिर ठाढ़ी ॥
३०८ ॥ दोहा ॥ पाइ कुंज एकंत में भरी अंक ब्र
जनाथ ॥ रोकन को तिय करति है कह्यौ करत न
हिं हाथ ॥ ३०९ ॥ अथ स्वेद ॥ हरष लाज श्रम
कोप ते इत्यादिक ते होय ॥ पानी प्रगटत देह में
स्वेद कहत हैं सोइ ॥ ३१० ॥ यथा ॥ किंकिनी
नेवर की झनकारनि चारु पसारि महा रस जाल
हि ॥ स्वेद के बूंद लसे तन में रति अंत रही लपटा
इ गुपालहि ॥ काम कलोलनि में मतिराम कला
निनि हाल कर्यौ नंदलालहि ॥ मानो फली मु
कता फल पुंजनि हेम लता लपटानी तमालहि
३११ ॥ दोहा ॥ कुच ते श्रम जल धार चलि

मिली रुआवलि रंग ॥ मनो मेरु की तरइटी भयो लिता सित रंग ॥ ३१२ ॥ रोमांच ॥ हर्षभय दिक प्रगट होम उमग जो अंग ॥ ताहि कहत रोमांच हैं कवि जन सुमति उतंग ॥ ३१३ ॥ यथा चंदमुखी हांसी में चमेली की लता सी होति चंपक लता सी अंग जोति को धरति है ॥ कवि मतिराम तेरी अंग की सुबास लहैं कौन ले रि ऐसी छिपे जानि न परति है ॥ नेसिक निहारि उनपे खी नैन को रमि सों ऐसी अनुल की कलानि आचरति है । ललित तमाल स्याम रसिक रसाल की कलिन सुकुलित के कुलानि सों करति है ॥ ३१४ ॥ दोहा निहीं अंग छिग छै कढे लुषै बेल की छांह ॥ अजहूं लो अथ लोकियं पुलक पटल ता मांह ॥ ३१५ ॥ अथ स्वर भंग ॥ कोप हर्ष भय भीति ते बचन और विधि होय ॥ ताहि कहत स्वर भंग हैं कवि कोविद सब कोइ ॥ ३१६ ॥ यथा ताहि ले आई अली रति मंदिर जाकी लगी रति यो परछाही ॥ आइ गये मतिराम तहीं जिनि को दिक काम कला अव गाही ॥ देखतही दहुरी थिगरी फकरी हंसि के निय कीपिय बाही ॥ लाजनि

नैं मति मंद भई सुकही सुख संद महू करि नाहीं ॥३१७
दोहा ॥ कहा जनावति चातुरी कहा चढ़ावति
भौंह ॥ अधनिकसे अरवरानि सों भौंहे कीजै सौंह
३१८ ॥ कंप ॥ क्रोध हरष भय आदि दे थरहरा
ति है देह ॥ ताहि कंप यों कहत हैं कवि कोविद
मतिगेह ॥ ३१९ ॥ यथा ॥ चंदमुखी अरविंद
की मालनि गूंधत रूप अनूप बनाइहो ॥ काम
सरूप तहां मति राम अनंद सों नंद कुमार पधार्यौ
देखत कंप छुट्यौ तिय के तन यौं रघुराई को धी
ल उचार्यौ ॥ सीरे सरोज लगे सजनी कर कांपत
आतन हार सवार्यौ ॥ ३२० ॥ दोहा ॥ लाल
वदन लखि बाल के कुचनि कंप रुचि होति ॥
चपल लोल चकवा मनौं चाहि चंद की जोति ॥
३२१ ॥ वैवर्ण्य ॥ मोह भयादिक ते जहां वर्ण
और विधि होइ ॥ ताहि कहत वैवर्ण्य हैं सकल
सयाने लोइ ॥ ३२२ ॥ यथा ॥ छल सों छबीली
कों सहेलिन लिवाइ करि ऊपर अटारी आइ रू
प रच्यौ ख्याल को ॥ कवि मतिराम कहैं भूषण भ
नक सुनि चाइ भौ चपल चित रसिक रसाल को ॥
आली चली लपल अलीक मिसु कारि कारि आवन

निहारि करि मदन गुपाल को ॥ लालन को चंद
सो बदन अवलोकि अरबिंद सो बदन कुम्हिला
इगयो बाल को ॥ ३२३॥ दोहा ॥ बालरही
इकटक निरखि लाल बदन अरबिंद ॥ सियराई
नैननि परी पियराई मुख चंद ॥ ३२४॥ आंसू ॥
हर्ष दुक्ख भय आदि दै जल आवै अंखियानि ॥
ताहि बखानत अश्रु कहि ग्रंथनि को मत मानि
३२५ ॥ यथा ॥ बैठे हुते लाल मन मोहन मो
हनी बाल छिनक सकोच राखै गुरुजन भीर को
कवि मतिराम डीठ और की बचाइ देखै तहीं
और भ्रम राखै अधीर को ॥ तन को धरै को
धीर मन की खबरि भूली आंखिन में छायो पूर
आनंद के नीर को ॥ उमगि हिये ते आयो प्रेम
को प्रवाह ताते लाज गिरि गई जैसे तरवर ती
र को ॥ ३२६॥ दोहा ॥ बिन देखे दुख के चलैं
देखे दुख के जाहिं ॥ कहौ लाल इनि दृगनि तें
आंसू क्यौं ठहराहिं ॥ ३२७॥ प्रलय ॥ जीविन
तन में होति है ईहा सकल निरोध ॥ हर्ष दुक्ख भय
आदि दै प्रलय कहत हैं सोध ॥ ३२८॥ यथा
जा दिन तें छबि सों मुसिकात कहूं निरखे नंद

लाल बिलासी ॥ तादिन ते मन ही मन में मनि राम सुधासी ॥ नेक निमेष न लागत नैन, चकि चित तिय देव तियासी ॥ चंद मुखी न हलै न चलै निरवात निवास में दीप सिखा सी ॥ ३२९ ॥ दोहा ॥ आयो पीउ विदेश तें बहुतै द्यौस विताइ ॥ सखी उठाई पास तें सांझ हिं ते जंमुहाइ ॥ ३३० ॥ जृंभा ॥ जृंभाहू को कहत हैं नवमो सात्विक भाव ॥ उपजै आलस आदि तैं बरनत सब कबिराव ॥ ३३१ ॥ यथा ॥ केलि कै सकल राति मात उठी अलसात नींद भरे लोचन जुगल बिलसतु है ॥ लाजनि तें अंगनि दुरावनि है बार बार खेंचि करि बसन बिहारी बिलसतु है ॥ कवि मतिराम आई आलस जंभाई मुख ऐसो मनभावती को सोभा बिलसतु है ॥ अरुण उदोत मानों शोभा के सरोवर में शोभानि शोभा को सरोज बिलसतु है ॥ ३३२ ॥ दोहा ॥ आयो पीउ विदेश ते बहुतै द्यौस बिताइ ॥ सखी उठाई पास तें सांझहिं ते जंमुहाइ ॥ ३३३ ॥ अथ स्रंगार ॥ जो बरणत तियपुरुष को कवित बढु रस भाव ॥ तासों रीझत सुमति कवि सो स्रंगार

सुहाव ॥३३४॥ कहत सिंगार सो भांति है प्रथम कहत संजोग ॥ ग्रंथनि को मत देखि के दूजो कहत वियोग ॥ ३३५॥ प्रमुदित नायक नायको जहां मिलाप में होत ॥ सो संयोग सिंगार कहि बरणत सुकवि उदोत ॥ ३३६ ॥ संयोग श्रृंगार यथा ॥ प्रानपिया पिय आनंद सों विपरीत रची रति रंग रह्यो है। काम कलोलनि में मति राम रही धुनि त्यों कलि किंकिनि की छै ॥ आनन की उजियारी परी श्रम बूंद समेत उरोजन से छै ॥ चंद की चांदनि के परसे मनो चन्द परवान पहार चले है ॥ ३३७॥ दोहा ॥ चुवत परस्पर हेरि कें राधा नन्द किशोर ॥ सब में द्वै ही होत हैं चोर मिहचनी चोर ॥ ३३८॥ अथ हाव ।
नारिन की श्रृंगार की इहा कल्पित होव ॥ ते संयोग श्रृंगार में बरणत सब कवि राव ॥ ३३९ ॥ लीलो प्रथम बिलास पुनि त्यों बिच्छिति बखानि विभ्रम किल किंचित बहुरि मोट्टाइत उर आनि ३४० बहुरि कुट्टमित कहत हैं पुनि बिब्बोक बखानि ॥ ललित बहुरि अरु बिहृत कहि सकल हाव दस जानि ॥ ३४१॥ अथ लीला ॥ पिय भूषन बसनादि की लीला करै जो बाल ॥ तासों लीला हाव

कहि बरणत सुकवि रसाल ॥ ३४२ ॥ यथा ॥ प्या
रणी पिय की पगरी घर भीतर आपने सीस संवारी
एते में आगन तें उठि के तहां आइ गयो मतिराम बि
हारी ॥ देखि उतारन लागी पिया बिय सों हानि सों
बहुरौ न उतारी ॥ नैन नवाइ लजाइ रही मुखि
आइ लई उर लाइ पियारी ॥ ३४३ ॥ दोहा ॥
मेरे सिर कैसी लसै यों कहि बांधी पाग ॥ सुंद
रि रति विपरीत को प्रगट कियो अनुराग ॥ ३४४
अथ बिलास ॥ गमन नैन बचनादि में होतु जो
कछू विशेष ॥ बरनत ताहि बिलास कहि रस
मय सुकवि अशेष ॥ ३४५ ॥ यथा ॥ किंकिनि क
लित कल नूपुर ललित रव गौनु तेरो देखि कें सक
तु करि गौनु को ॥ मृदु मुसिक्यानि मुख चंद चारु
चांदनी सी रख्यो को उज्यारो अभिराम घर भौनु
को ॥ सहज सुभावनि सों भौंहनि के भावनि सों
हरति है हठि मतिराम मन रौनु को ॥ रूप मद
छकी आजु छबि सों छबीली देति तिरछी चितौ
नि मैन बरछी सुकौनु को ॥ ३४६ ॥ दोहा ॥
तेरी चलनि चितौनि मृदु मधुर मंद मुसिक्यानि
बाढ़ रही सखि लाल कौ लखि अनिमिष अंखियानि

२४७॥ अथ विछित्ति॥ थोरेही भूषण वसन जहां शोभा सरसाइ॥ ताहि कहत विछित्ति हैं जे प्रवीन कविराइ॥२४८॥ यथा॥ बारनें सकल एक रोरी ही की आड़ पर हाहा न पहिरि और आभरन अंग में॥ कबि मतिराम जैसे तीक्षण कटाक्ष तेरे ऐसे कहा शर दें अनंग के निषंग में सहज सुभाइ सुघराई रीझि मन मेरो डोलतु है तेरी अद्भुत की तरंग में॥ सेत सारी ही सों सब सौतें रंगी श्याम रंग सेत सारी ही सों रंगे श्याम लाल रंग में॥२४९॥ दोहा॥ नथुनी गज मुकानि कील सक्ति चारु शृंगार॥ जिनि पहिरे सुकुमार तन और आभरन भार। २५०॥ अथ विभ्रम उलटे भूषन बसन को होत जहां पहिराव॥ ता सों विभ्रम हाव कहि वर्णत हैं कविराव।२५१ यथा॥ सांझहि ते चलि आवत जात जहां तहां लेग तिन्हैं न डरौंगी॥ प्रीतम सों रहि हौ यही रूप धौं कै है कहा जब अंक भरौंगी॥ जानति हौं मतिराम तऊ चतुराई की बातनि हीय धरौंगी॥ किंकिनि को उर हार किये कहौ कौन सो जाइ विहार करौंगी॥२५२॥ दोहा॥ चली चली कहि कौन पै

बड़े कौनके भाग ॥ उलटो कंचुकि कुचन पर कहे
देत अनुराग ॥ ३५३॥ अथ किलकिंचित ॥
हरष गरब अभिलाष श्रम हास रोस मद भीति
होत एकही संग में किलकिंचित इहि रीति। ३५४
यथा॥ लालन बाल के द्वैही दिना तें परी मन
आनि सनेह की फांसी ॥ काम कलोलनि में मति
राम लगीमनो चांदन मोद की भांसी ॥ प्रीतम के उ
बीच चुभी दुलही के बिलास मनोज की गांसी
खेद बढ्यौ तन कंप उरोजनि आंगिर आंसू कपो
लनि हांसी ॥ ३५५। दोहा ॥ सकुच न रहिये सांव
रे सुनि गरबीले बोल ॥ चढति भौंह बिहसत नय
न बिहसत गोल कपोल ॥ ३५६॥ अथ मोट्टाइत
बातनि कौ बिघटन भरी पुनि मिलाप की चाह।
सो मोट्टाइत जानियो बरणत सब कवि नाह ॥
३५७॥ यथा ॥ फूलि रहे द्रुम बेलिन सौं मिलि
पूरि रही अंधियारी महारी ॥ मोहि अकेले बिलो
कि इहां कछु औरही सो भई दीठि तिहारी ॥
जैसी छकि हम तों तुम सौं अब होइगी वैसिये
प्रीति उहारी ॥ चाहत जो चित में हित तौ जिनि
बोलिये कुंजनि बीच बिहारी ॥ ३५८॥ दोहा

झूंठेहूं ब्रज में लग्यौ मोहिं कलंक गुपाल ॥ स
पनेहूं कबहूं हिये लगे न तुम नंदलाल। ३५९
अथ कुट्टमित ॥ ईहा सुख में दुक्ख की प्रगट
करे जो बाम ॥ परम ललित यह हाव तहां हो
त कुट्टमित नाम॥ ३६०॥ यथा ॥ सोने कीसी
बेली अति सुंदर बेली बाल ठाढी ही अकेली अल
बेली द्वार ठहियों ॥ मतिराम आंखिन सुधासी
बरषासी भई गई जब दीठि वाके मुख चंद पहियों
नेंक नीरें जाइ करि बातनि लगाइ करि कछू मणि
पाइ हरवाइ गही बहियां ॥ सैननि चरचि लई
गैननि थकित भई नैननि में चाह करै बैननि में नहि
यां ॥ ३६१॥ दोहा ॥ प्रीतम को मन भावती मिलत
प्रेम उत्कंठ ॥ बाहीं छुटै न कंठ ते नाहीं छुटै न कंठ।
३६२॥ अथ विब्बोक ॥ जो पिय को अभिमान तें
करै निरादर बाम ॥ ताहि कहत बिब्बोक हैं जे मती
न मतिधाम ॥ ३६३५ यथा ॥ आयो है मानहु राज
कछू चढि बैठत ऐसें पलास के पोदें ॥ गुंज गरें सिर
मोरपखा मतिराम हौ गाइ चरावत चोदें ॥ मोतिन
को मेरो तोर्यौ हरा गहि हाथनि सों रहे चूनरी पोदें।
ऐसेहीं डोलत छैल भये तुम्हें लाज न आवति कामरी ओढे

४ ॥ दोहा ॥ आन पियारे पग पस्यौ तून लखतिउ
ओर ॥ ऐसो उरज कठोर तौ न्याइ ही उरज कठोर ॥
६५ ॥ अथ ललित ॥ बने बानि कनि सों सरस स
कल आभरन अंग ॥ ललित हाव तासों कहैं जे कवि
बुद्धि उतंग ॥ २६६ ॥ यथा ॥ मंद गयंद की चाल
चलै कल किंकिनि नेवर की धुनि वाजै ॥ मोती के हा
रनि सों हियरा हियरा हरिदे को हुलासनि साजै।
सारी सूही मतिराम लसै मुख संग किनारी की यों
छवि छाजै ॥ पूरन बिंब पियूष मयूष मनों परिवेष
की रेष विराजै ॥ २६७ ॥ दोहा ॥ बिरी अधर अं
जन नयन मेंहदी पग अरु पानि ॥ तन कंचन के आ
भरन नीरि परत पहिचानि ॥ २६८ ॥ अथ विक्षित
जो परिपूरन होत नहिं पिय समीप अभिलाष ॥ तासों
विक्षित बखानहीं जिनि की कबिता दाष ॥ २६९ ॥
यथा ॥ सकल सहेलिनु के पाछें पाछें डोलति है मं
द मंद गोन आजु हियो पकरतु है ॥ सनमुख होत सुख
होति मतिराम जब पौन लागे घूंघट को पट उघरतु
है ॥ जमुना के तट बंसीवट के निकट नंदलाल त्यों स
कोचनि नें चाहौ न परतु हैं ॥ तन तौ तिया को बरअं
वैं भरतु मन सांवरे बदन पर भांवरे भरतु है ॥ २७०

अथ वियोग शृंगार लक्षण ॥ दोहा ॥ प्यारी
पीउ मिलाप बिनु होत नहीं आनन्द ॥ सो वियोग
शृंगार कहि बरणत सब कबि वृन्द ॥ ३७१ ॥ वियो
गभेद ॥ कहि पूरब अनुराग अरु मान प्रवास बि
चारि ॥ रस शृंगार वियोग की तीनि भांति उर धारि
३७२ ॥ अथ पूर्वानुराग ॥ जो प्रथमहिं देखै सुनै
बाढै प्रेम सभाग ॥ बिन मिलाप जो विकलता सो पू
रब अनुराग ॥ ३७३ ॥ यथा ॥ न्यौंते गए कहूं नेह
बढ्यौ मतिराम दुहूं के लगे दृग गाढे ॥ ऊंचे अटा
पर कांधे सहेली के ठोढी दिये चितवै दुख बाढे ॥
लाल चले सुनि के यह कों तिय अंग अनंग की आ
गि सों डाढे ॥ मोहन जू मन गाढो किये पग द्वै क
चलैं फिर होत हैं ठाढे ॥ ३७४ ॥ दोहा ॥ निरखी
नेह नवीन मैं दई दई यह बात ॥ सूखति देह दु
हुन की त्यों पानिप सरसात ॥ ३७५ ॥ अथ मान
मान कहत हैं तीनि बिधि लघु मध्यम गुरु नाम ॥
तिन के भेद बनाइ के बरणत कवि मतिराम ॥ ३७६
अथ लघु मान ॥ और बाल के लखन जहां लखै
कंत को बाल ॥ बरणत हैं लघु मान तहं छुटत तनक
ही ख्याल ॥ ३७७ ॥ यथा ॥ देखत और तियानि

छबीले को मान छबीली के ना छिन छायो ॥ प्रीतम
त्यों चतुराई करी मतिराम कछू परिहास बढायो।
राति रची विपरीति सु प्रीतम सों वाको काहि सखीन सु
सुनायो ॥ भूलि गई रिस लाजनि तें मुसिकाइ प्रिया
मुख नीचे को नायो ॥ ३७८ ॥ दोहा ॥ मान जना
वति सखनि में मनुन मान के ठाट ॥ बाल मनावन
को लखै लाल निहारी बाट ॥ ३७९ ॥ अथ मध्यम
मान ॥ पिय मुख औरै को सुनै नाउं जानि यह नारि
होतु मान मध्यम तहां वरणत सुकवि बिचारि ॥
३८० । यथा ॥ दोऊ अनंद सों आंगन मांझ विरा
जैं असाढ की सांझ सुहाई ॥ प्यारी के बूझत और
तिया को अचानक नाउ लियो रसिकाई धायो
उनै सुंह कोप को मेह पिया सुर चाप सी भौंहैं च
ढाई ॥ आंखिन ते गिरे आंसू के बूंद सु हास गयो
उड़ि हंस की नाईं ॥ ३८१ ॥ दोहा ॥ भरी भांवरें
सांवरे तुम ऊपर बलि जाउं ॥ वाही को मन ध्यान
है वाही को सुख नाउं ॥ ३८२ ॥ अथ गुरु मान
बोलत और तियानि सों पिय को देखै वाम ॥
होतु तहां गुरु मान सो बरणत कवि मतिधाम
३८३ ॥ यथा ॥ मेरे प्रान प्यारे कहूं सहज सुभा

हू प्यारी कहा थी कही जो कछू बात काहू बाल सों ॥ ताकौ एती रिस है अयाननि की रीति तू तो दीप की जोति जागे जोबन रसाल सों ॥ कबि मतिराम मेरो कह्यौ मैन आन आली ठान जिनि मान ऐसे मदन गुपाल सों ॥ भौंहैं करि सूधी बिहंसोंहैं से कपोल नेक सौंहैं करि लोचन रसौंहैं नंद लाल सों ॥ ३८४

दोहा ॥ बङ्क नाइक सों बात में मान भलो न सयान ॥ दुख सागर में बूडि है बांधि गरे गुरु मान ३८५

अथ प्रवास ॥ प्रीतम बसैं बिदेश में बिरह जहां सरसाइ ॥ बरणत तहां प्रवास कहि जे प्रवीन कबिराइ ॥ ३८६ ॥ यथा ॥ धुरवांनि की धावनि मानों अनंग की तुंग ध्वजा फहरान लगी ॥ नभ मंडित ह्वै छिति मंडल छ्वै छिन जोति छटा छहरान लगी ॥ मतिराम समीर लगे लतिका बिरही बनिता थहरान लगी ॥ परदेश सें पीउ संदेश न पायो पयोद घटा घहरान लगी ॥ ३८७ ॥ दोहा ॥ चलत लाल कों मैं कियो रजनी हियो परवानु ॥ कहा करौं दरकत न हौं दूते बियोग कृशानु ॥ ३८८ ॥ अथ अभिलाष

ताहि कहत अभिलाष हैं जहं मिलाप की चाह ॥ प्रेम कथन ते जानिये बरनत सब कबि नाह ॥ ३८९ ॥